हिन्दू अङ्क प्रतीक

शून्य

१ २

३

अभ्र ४ ५ व्योम

६

७ ८

९

गगन

पृथ्वी

डॉ कामेश्वर उपाध्याय

हिन्दू अङ्क प्रतीक

संकलयिता

डॉ. कामेश्वर उपाध्याय

त्रिस्कन्धज्योतिषम्-प्रकाशन

प्रकाशक-

त्रिस्कन्धज्योतिषम् प्रकाशन
९६; जानकीनगर, बजरडीहा,
वाराणसी २२१००९
उ.प्र.

प्रथमसंस्करण २००७
विक्रमसंवत् २०६३
वसन्तपञ्चमी

प्रतियाँ १०००

मूल्य ५०/-

पुस्तक का नाम-
हिन्दू अङ्क प्रतीक

मुद्रक :
महावीर प्रेस
भेलूपुर, वाराणसी

मन्त्रद्रष्टा, अङ्ककृद्

ऋषियों को

जिन्होंने विश्व को

शून्य, अनन्त और

एक से नव संख्यायें दीं

विषयसूची

चार नायक
चार नायिकायें
चार महावाक्य
चार शाङ्करमठ
चार महाकुम्भ
चार धाम
चार तीर्थ (बौद्ध)
चार सामगान
चार प्रमाण (न्याय दर्शन)
चार सिद्धान्त (न्याय दर्शन)
अनुबन्ध चतुष्ट्य (वेदान्त)
चार आर्यसत्य (बौद्ध)
चार प्रतिमायें
४ नीतियाँ
चार पाद (धनुर्वेद)
४ प्रकार के हाथी
(५)
पञ्चरत्न
पञ्चपल्लव
पञ्चगव्य
पञ्चामृत
पञ्चध्यानी (बुद्ध)
पञ्चाग्नि
पञ्च ज्ञानेन्द्रिय
पञ्चकर्मेन्द्रिय
पञ्चाङ्ग (ज्योतिष)
पञ्चाङ्ग (राजशास्त्र)
पञ्चाङ्ग (कर्मकाण्ड)
पञ्चाङ्ग (पुरश्चरण)
पञ्चशाखा ऋग्वेद
पञ्चनिकाय (बौद्ध)
पञ्चमहाव्रत (जैन)
कामदेव के पञ्चबाण
कामदेव के बाणों के धर्म
पञ्चोपचार (पूजन साधन)
पञ्चकन्यायें
पञ्चचिकित्सा
पञ्चकोष
पञ्चगङ्गा
पञ्चगुण, पञ्चतन्मात्रायें
पाँच वृत्तियाँ
पञ्च पर्वा अविद्या
पञ्चतत्त्व, पञ्चमहाभूत
पञ्चमकार (तन्त्र)
पञ्चदेवता
पञ्चानन शिव
पञ्चगौड़ (उत्तर भारत)
पञ्चद्राविण (दक्षिण भारत)
पञ्चपिता
द्रौपदी के पञ्चपुत्र
शरीरस्थपञ्च वायु
पञ्च उपप्राण
पञ्चमहापातक
पञ्चमहायज्ञ
पञ्च नृपयज्ञ
पञ्चवटी
पञ्चबलि
स्वर्गीय पञ्चवृक्ष
पंचनद
पञ्चलोकपाल
पञ्चधान्य
पञ्चशिला
पञ्चकुम्भ (शिलान्यास)
पञ्चाङ्गुलि
पञ्च लगधसूत्र (ज्योतिष)
पञ्च यक्ष
पञ्च कारु (कारीगर)
पञ्च कर्म अवस्था (यास्क)
५ शास्त्र अधिकरण
पंच तीर्थ

पंच अवस्थायें
पंच तृण
पञ्च दीर्घ अवयव (शरीर)
(६)
षड् रस
षट्चक्र (योग)
षड्दर्शन
षट् कृत्तिकायें (वैदिक)
षट् कृत्तिकायें (पौराणिक)
षट् शास्त्र
षड् ऋतु
षड् आततायी
षड् इति (पैदावार भय)
षट् कर्म (तन्त्र)
षडङ्ग (न्यास)
षड् लक्षणा (साहित्य)
षट् कर्म (गणित)
षट्तिला तिथि
षड्दोष
षट् गुण (राजशास्त्र)
षट् सुख
६ गरुड़ पुत्र
षड्वर्ग
षट् प्रश्न
(७)
सप्तधातु
शारीरिक सप्तधातु
सप्तधान्य
सप्तमृत्तिका
सप्त समुद्र
सप्त द्वीप
सप्त कल्प
सप्तर्षि
सप्तपुरी
सप्त चिरंजीवि
चक्रव्यूह के सप्त महारथी
सप्त पितृगण
सप्तलोक मातायें
सप्त अप्सरायें
सप्तमेघ
सप्तवायु
सप्त ऊर्ध्वलोक
सप्त अधः लोक
सप्तप्रकृति (राज्य)
सप्तपर्वत
सप्तस्वर
सप्तवार
सप्तशक
सप्तविध सामगान
सप्त जिह्वा अग्नि
सप्तभेद (प्रणव, ॐ)
सप्तकाण्ड (श्रीरामचरितमानस)
७ (सप्त) सूर्यपुत्र
(८)
अष्ट वसु
अष्टसिद्धियाँ
अष्टाङ्गयोग
अष्ट धातु
अष्टांग आयुर्वेद
अष्टाङ्ग पिण्ड
अष्ट महादान
साष्टाङ्गप्रणाम
अष्ट विवाह
अष्टाङ्गमैथुन
अष्ट प्रकृति (गीता)
अष्टविकृतियाँ (वेद)
अष्ट आसन (जप हेतु)
अष्ट आत्मगुण
अष्ट प्रकृति (सांख्य)
अष्ट भैरव

अष्ट नाग
अष्ट भोग
अष्ट आयुध
अष्ट दिग्गज
अष्ट मंगलचिह्न
अष्ट गुण
अष्टविध मृत्यु
अष्टमार्ग (बौद्धधर्म)
अष्ट यज्ञद्रव्य
अष्ट मंत्री
८ अष्ट गण (छन्द: शास्त्र)
अष्टधा गति (ग्रहों की)

(९)

नवनिधियाँ
नौ प्रकार के विष
नवगण
नवग्रह
नवरत्न
नवरत्न (विक्रमादित्य सभा)
नवग्रह औषधि
नवरस
नव स्थायी भाव
नव कालमान
नवदुर्गा
नवगौरी
९ ब्राह्मणग्रन्थ (सामवेद)
९ स्वर वर्ण
नव द्रव्य (वैशेषिक दर्शन)
नव कर्म साक्षी

(१०)

दश अवतार
दश विश्वदेव
दशधर्मलक्षण
दश महाविद्या
दश दिक्पाल
दश लकार (काल भेद)
दश महादान
दश दिशायें
दश पाप
दशहरा गंगा
ब्रह्मा के दश पुत्र
दश देवयोनियाँ
दश आसन
दशाङ्गसुधूप
दश प्रधान उपनिषद्
रूपक (नाटक) के १० भेद
दश पारमितायें (शील)
दशविध दीक्षा
दश अङ्ग (धनुर्वेद)
१० प्रकार की कपिला गाय
१० अधर्म लक्षण
मनु की १० सन्तानें
१० कुलद्रुम (प्रधानवृक्ष)
दश दुग्ध

(११)

एकादश रुद्र
एकादश करण (ज्योतिष)
११ हाव

(१२)

द्वादशज्योतिर्लिङ्ग
द्वादश आदित्य
वैदिक द्वादशमास
लौकिक द्वादशमास
द्वादश साध्यगण
द्वादश राशियाँ
द्वादश प्रमेय (न्यायशास्त्र)
द्वादश भाव (ज्योतिष)
द्वादश दर्शन

(१३)

१३ (तेरह) संख्या के अधिपति

(१४)
चतुर्दशमनु
चौदह सृष्टि
चतुर्दश रत्न
चतुर्दश यम
१४ माहेश्वर सूत्र (पाणिनि)
चतुर्दश इन्द्र
(१५)
पन्द्रह तिथियाँ
प्रमुख पन्द्रह प्राण वाहिनो नाड़ियाँ
(१६)
षोडश चन्द्रकलायें
षोडशोपचार
षोडश शृंगार
षोडश मातृकायें
षोडश विकार (सांख्य)
सोलह महादान धर्मशास्त्र
न्याय (तर्क) शास्त्र के षोडश पदार्थ
१६ यज्ञस्तम्भ
१६ मूलिनी (औषधीय पदार्थ)
षोडश महाजनपद
(१८)
अष्टादश विद्यायें
अष्टादश स्मृतियाँ
अष्टादश पुराण
१८ तिङ् (क्रियात्मक काल)
१८ ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तक
१८ वास्तुशास्त्र प्रवर्तक
१८ पर्व (महाभारत)
(२०)
२० कफ व्याधि
(२१)
२१ प्रजापति
(२४)
चौबीस तीर्थङ्कर
चौबीस गुण
चौबीस विष्णु
(२७)
सत्ताइस नक्षत्र
सत्ताइस योग (ज्योतिष)
२७ अग्नियाँ (सप्तविंशति: पावका:)
(३२)
३२ पुरुषलक्षण
(३३)
अधिमास के तैंतीस देवता
३३ संचारी भाव
(३६)
३६ तुषित
(३७)
३७ पूजा जल
(३८)
३८ प्रधान अप्सरायें
(४०)
४० पित्त व्याधि
(४९)
उनचास मरुत्
(५०)
५० (पञ्चाशत्) क्षेत्रपाल
(५१)
५१ शक्तिपीठ
(६०)
६० संवत्सर
(६४)
६४ योगिनी (तन्त्रोक्त)
६४ कलायें
६४ वर्णाक्षर (वैदिक)
(८०)
८० वातव्याधि
(१००)
धृतराष्ट्र के १०० पुत्र
हिन्दी के सौ अङ्क

भूमिका

संस्कृति संवहन में अंकों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। वेदों से लेकर काव्यग्रन्थों तक, शास्त्रोक्ति से लेकर लोकोक्ति तक, अध्यात्म से लेकर लौकिक व्यवहार तक, क्षण से लेकर प्रलय तक सनातन हिन्दू समाज के जीवन में अंकों और अंक प्रतीकों का प्रयोग विद्यमान है। रुद्र कहने से ग्यारह, लोचन कहने से दो और मनु कहने से चौदह का बोध तत्काल हो जाता है। भारतीय ज्योतिष गणित में छंदों के भीतर अंकों का प्रयोग इसी तरह से हुआ है। वसु यानी आठ, राम यानी तीन और व्योम यानी शून्य को यदि एक साथ कहा जाए- वसु राम व्योम तो ८३० संख्या की उपस्थिति हो जायेगी। जब इसे श्लोक में कहा जायेगा तो 'अंकानां वामतो गतिः' सूत्र के अनुसार व्योमरामवसु होगा। वैदिक युग से लेकर आज तक इन प्रसिद्धि प्राप्त अंकों का उपयोग विषय के भीतर संज्ञा के रूप में भी हुआ है। इन्हीं विषयों को इस पुस्तक में संकलित करने का कार्य हुआ है। यह कार्य एक वर्ष के अन्दर हुआ और यदि इस पर शोधकार्य किया जाए तथा सूक्ष्म प्रवृत्तियों पर दृष्टि डाली जाए तो यह ग्रन्थ तीन-चार हजार पृष्ठों की मांग करेगा। इसे जनोपयोगी बनाना हमारा मुख्य उद्देश्य था। अतः इसका कलेवर छोटा रखा गया।

अंकों की प्रसिद्धि और प्रसिद्ध विषयों की संख्यात्मक प्रसिद्धि को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। हिन्दू, बौद्ध और जैन अंकप्रतीकों को ही यहाँ समाविष्ट किया गया है। साधारण रूप से जिन तत्त्वों की जानकारी होनी चाहिए उन्हें यहाँ ले लिया गया है। यदि विशिष्ट अंकात्मक विषय छूटते हैं तो यह स्वाभाविक भी है। यहाँ पर संकलित विषयों पर यदि शोधकार्य

किया जाए तो यह समुद्रमन्थन होगा। उदाहरणार्थ उनचास मरुत्। श्री राम चरित मानस में उनचास मरुत् की चर्चा आयी है- हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत् उनचास। इन उनचास मरुतों की प्रकृति तथा पदार्थ पर शोध करना बृहद् विषय होगा। यहाँ जानकारी हेतु प्रसिद्ध विषयों को उपस्थापित करना ही महत्त्वपूर्ण है। संख्या की दृष्टि से अनेक अङ्कों पर प्रसिद्ध विषयों का न मिल पाना भी प्रयास की न्यूनता को इंगित करता है। इस पुस्तक से संस्कृति का ज्ञान-कोष समृद्ध होगा ऐसा विश्वास है।

अंकों को तीन प्रकार से लिखने की परंपरा प्राचीन भारत में प्रचलित थी; जैसे शब्द द्वारा, संख्या द्वारा और प्रतीक द्वारा। एक चौथी परंपरा भी थी, जो समाज में अधिक प्रचलित नहीं थी। इसका प्रयोग आर्यभट ने चतुर्थ शताब्दि में किया था। इसे वर्णाक्षर परंपरा कहते हैं। अकचटतप आदि शब्दों से संख्या का बोध करना। भारतवर्ष की सनातन संस्कृति ने ही विश्व को अंकज्ञान और गणितज्ञान दिया। आज कुछ लोग ज्ञान नेत्र में धूलि झोंक कर इस तथ्य को धुंधला करना चाहते हैं। इसी दृष्टि से यहाँ पर आरम्भ में अंकों को लेकर एक आलेख दिया गया है। हमारा दायित्व है- हम संस्कृति के हर सूक्ष्म तत्त्वों को बचायें, जीवित रखें।

विदा पुनर्मिलनाय

वसन्त पञ्चमी
संवत्सर २०६३
मंगलवार; २३.१.२००७

कामेश्वर उपाध्याय
कामेश्वर उपाध्याय

भारतीय अंकों का महत्त्व

समस्या की जड़-

आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में अंग्रेजी अंकों का प्रचलन इतने तीव्र वेग से बढ़ा है कि प्राचीन भारतीय अंकों का धीरे धीरे प्रयोग कम से कम होने लगा है। आजकल इन अंग्रेजी अंकों को कुछ लोग भ्रम बस 'रोमन अंक' नाम से भी अभिहित कर रहे हैं। किसी भी गणितीय प्रक्रिया और गणितीय चिह्न को सर्वथा विस्मृत होने और लुप्त होने में दो सौ से तीन सौ वर्ष लगते हैं। अत: यदि अंग्रेजी अंकों के प्रसार और प्रयोग की यही गति और स्थिति बनी रही तो भारतीय अंकों के विलुप्त होने का खतरा उभर पड़ेगा। व्यवहार में ऐसा इसलिए हो रहा है; क्योंकि अंग्रेजी शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण ज्यादातर लोग उन्हीं अंकों को जानते हैं जिन्हें वे कान्वेन्टों या स्कूलों में सीखते हैं। आज बैंकों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों तथा छापखाने एवं आफसेट मशीन के प्रयोगों में अंग्रेजी अंकों की उपलब्धता आसान है। यहाँ तक की पादटिप्पणियों एवं वेदमंत्रों की संख्या लिखते समय भी अंग्रेजी अंकों का ही प्रयोग किया जा रहा है। यह स्थिति अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। अंग्रेजी अंकों को रोमन अंक भी कहना न्यायसंगत नहीं है; क्योंकि पाँचवी शताब्दी में रोम पराजित हो कर कंस्तुताइन राजा के कार्यकाल में अपना प्राचीन स्वरूप बोध विस्मृत कर चुका है। पाँचवी शताब्दी से पूर्व का रोम और उसके बाद के रोम में सभ्यतागत अनेक बदलाव आ चुके हैं।

आशा की किरण-

इतिहासकारों के अनुसार जिस किसी भाषा या प्रतीक को दश हजार परिवार प्रतिदिवसीय व्यवहार में लाते हैं वह जीवित रहता है। भारतीय अंकों के लिए भी यही कारण जीवनदायी है।

अंक उत्पत्ति-

अंकों का शब्दात्मक शरीर और संख्यात्मक शरीर पहली बार भारतवर्ष की धरती पर ऋषियों के हृदय में अवतरित हुआ। इसीलिए वे अंककृद् हैं। यह देश ब्रह्म और माया का चिन्तक देश है। ब्रह्मविद्या के

अन्वेषण के क्रम में अंकों की उत्पत्ति हुयी है ऐसा हम साधिकार कह सकते हैं; क्योंकि भारतवर्ष की आर्षविद्या के उत्स ग्रन्थ वेद हैं। 'आकाश' और 'समुद्र' वेदान्तज्ञान में उदाहरण के तौर पर अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रयुक्त हैं। आकाश अनादि है; अनन्त है, महाबिलम् है। समुद्र की तरंगें माया की तरह तरंगायित होती हैं। आकाश को शून्य कहा गया है। यहीं से अंकों में शून्य का समावेश होता है। स्वतंत्ररूप से शून्य महत्त्वहीन था और है परन्तु महान् भारतीय गणितज्ञों एवं ऋषियों की दृष्टि में वह उत्पादक अंक है।

एक	द्वि	त्रि	चतु:	पञ्च
१	२	३	४	५
	षट्	सप्त	अष्ट	नव
	६	७	८	९
		शून्यम्		
		०		

सम्पूर्ण विश्व में ऋषियों द्वारा अन्वेषित अंकों की जानकारी धीरे धीरे पहुँची। ऋषि वैज्ञानिकों ने शून्य, नौ अंक़ तथा स्थानमान का अन्वेषण ईसा के पूर्व वेद एवं वेदाङ्गकाल में कर लिया था। जो आकाश को जानता है वह शून्य को जानता है। ऋषियों ने वैदिक संहिताओं में अंकों की स्थिति को दर्शाया है। उनके लिए आकाश शून्य, वृत्त या विन्दु था। पृथ्वी क्षैतिज रेखा थी।

'शून्य' का महत्त्व-

नि:संदेह शून्य की अवधारणा एवं उत्पत्ति गणित, खगोल और विज्ञान जगत् के लिए एक ईश्वरीय वरदान लेकर पृथ्वी पर आयी। ईसा से पूर्ववर्तीमुनि 'पाणिनि' के पूर्ववर्ती या समकालीन शाकल्यऋषि ने वृत्त के ३६० अंशों की चर्चा की है और 'ज्या' का मान बतलाया है। इससे यह सिद्ध होता है कि शून्य अंक भारतवर्ष में बहुत पहले ज्ञात हो चुका था। शून्य के ज्ञान के बिना वृत्त और उसके अंश की परिकल्पना नहीं की जा सकती थी। शून्य के महत्त्व को हम कुछ बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं-

- शून्य आकाश की तरह व्यापक और उत्पादक है।
- शून्य एक निष्क्रिय गणित प्रक्रिया है जो अंकों की अनन्त सक्रियता को रूपायित करता है।
- शून्य से ही सारे अंक निकले हैं।
- शून्य वैदिक ज्ञान-विज्ञान की कुक्षी से अवतरित हो कर वैश्विक गणित प्रक्रिया को जन्म देता है।
- शून्य एक ऐसा बिन्दु है जिससे सिन्धु बनता है।
- शून्य दर्शन (वैदिक) और गणित दोनों का वर्ण्य विषय है।
- शून्य विश्व की आकृति का परिचायक है चाहे उसका स्वरूप बिन्दु की तरह हो या वृत्त की तरह।

> **'शून्य आकाश का वाचक है और रेखा पृथ्वी का' शून्य और रेखा यानी आकाश और पृथ्वी के महामिलन से अंकों की उत्पत्ति हुयी।**

शून्य से अंकोत्पत्ति-

शून्य का आरम्भिक स्वरूप बिन्दु की तरह या लघुवृत्त की तरह रहा है। इनमें से पहले कौन-सा रूप प्रचलित था यह कहना कठिन है। आकाश को यदि चित्र रूप में उपनिबद्ध करना हो तो उसे शून्यांक से ही किया जा सकता है। अत: प्रचलित लघुवृत्त (०) को ही शून्य मानें तो अंकों की उत्पत्ति निम्नलिखितरूप में कल्पित हो सकती है-

शून्य	=	०				०
एक	=	०				१
दो	=	०				२
तीन	=	०				३

चार	=	०	४	४	४	४
पाँच	=	०	५	५	५	५
छः	=	०	६	६	६	६
सात	=	०	७	७	७	७
आठ	=	०	८	८	८	८
नौ	=	०	९	९	९	९

अंकों के निर्माण में शून्य, अर्धशून्य और रेखा का प्रयोग किया गया था। **शून्य आकाश का वाचक है और रेखा क्षितिज का। आकाश और क्षितिज के नौ प्रकार के सम्मेलन से नौ अंकों की उत्पत्ति हुयी। देश और काल के महामिलन से द्वैतरूपी अंकों की उत्पत्ति हुयी है।**

भारतीय अंक और अंग्रेजी अंक का अन्तर-

भारतीय अंक और अंग्रेजी अंक कें सैद्धान्तिक अन्तर को समझना आवश्यक है। यद्यपि भारतवर्ष का ही अंक (गणित) अरब और यूरोप में धीरे धीरे हजार बारह सौ वर्षों में व्यवसाय के माध्यम से पहुँचा था तथापि अंक संकेत में फेर बदल भी कालान्तर में हो गया।

भारतीय अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९
अंग्रेजी अंक	1	2	3	4	5	6	7	8	9

भारतीय अंक में एक की उत्पत्ति आज भी शून्य को दर्शा रही है; जबकि अंग्रेजी अंक एक रेखा मात्र को दिखा रहा है। भारतीय अंकों में ४, ५, ७ और ९ ऊर्ध्वगामी हैं; जबकि अंग्रेजी अंक का 4, 5 समानान्तरगामी और 9 अधोगामी है। 7 भी अधोगामी है। भारतीय अंक ४, ५ अधः से ऊर्ध्व चेतना को रेखांकित करते हैं।

अंकों की समानता-

भारतीय ६ अंक तथा ३ अंक से अंग्रेजी के 6 एवं 3 अंक संपूर्णतः मेल खाते हैं। **अंग्रेजी अंकों में सर्वथा दुर्गति 7 और 9 की है। ये सूक्ष्म स्तर पर हानिकारक तथा अशुभ हो गये हैं। इनका प्रयोग किसी शुभकार्य में नहीं किया जा सकता है।**

रोमन अंक-

रोमन अंक दार्शनिक विचारों से युक्त हैं। इनका स्वरूप निम्नलिखित है-

i ii iii iv v vi vii viii ix x

यहाँ लघुवृत्त वाले शून्य (०) का प्रयोग नहीं है। यहाँ बिन्दु वाले शून्य (.) का प्रयोग हुआ है। नौ और दश अंक तिर्यक् चेतना वाले हैं। शेष सभी अंक ऊर्ध्व चेतना वाले हैं।

तंत्र में अंक प्रयोग-

भारतवर्ष के "आगम" में यंत्र बनाने की प्रक्रिया प्राचीन काल से ही प्रचलित है। **यंत्र बनाने में यदि अंग्रेजी अंकों का प्रयोग किया जायेगा तो यह सुनिश्चित है कि उनका प्रभाव नहीं प्राप्त किया जा सकता। अंक सात और नौ ऊर्ध्वगमन को अधःगमन में बदल देंगे।** अतः ऐतिहासिक एवं अदृश्यप्रभाव उत्पादक अंकों को भारतीय लिपि में ही लिखना श्रेयस्कर है। अंग्रेजी अंकों को बहुप्रचारित कर देने मात्र से उनकी प्रभावहीनता को दूर नहीं किया जा सकता। साहित्य में प्रयुक्त कूट अंक और अंकों के स्वरूप से उत्पन्न साहित्यिक अभिव्यंजना भी तब मर जायेगी जब हम भारतीयलिपि में अंकों को लिखना बन्द कर देंगे। वे मुहावरे भी विफल हो जायेंगे जो मैत्री को तीरसठ (६३) और शत्रुता या विमुखता को छत्तीस (३६) के रूप में स्थापित करते हैं।



यजुर्वेद में अंक

१. एका च मे तिस्रश्चमे तिस्रश्च्चमे पञ्चचमेपञ्चचमे सप्तचमे सप्तचमे नवचमे नवचमऽएकादशचमऽएकादशचमे त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे पञ्चदशचमे पञ्चदशचमे सप्तदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचमऽएकविंशतिश्चमऽ-एकविंशतिश्चमे त्रयोविंशतिश्चमे त्रयोविंशतिश्चमे पञ्चविंशतिश्श्चमे पञ्चविंशतिश्चमे सप्तविंशतिश्चमे सप्तविंशतिश्चमे नवविंशतिश्चमे नवविंशतिश्चमऽएकत्रिंशच्चमऽएकत्रिंशच्चमे त्रयस्त्रिंशच्चमे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।

२. चतस्रश्चमेष्टौचमेष्टौचमे द्वादशचमेद्वादशचमे षोडशचमेषोडशचमे विंशतिश्चमेविंशतिश्चमेचतुर्विंशतिश्चमे चतुर्विंशतिश्चमेष्टाविंशति-श्चमेष्टाविंशतिश्चमे द्वात्रिंशच्चमे द्वात्रिंशच्चमे षट्त्रिंशच्चमेषट्त्रिंशच्चमे चत्वारिंशच्चमे चत्वारिंशच्चमे चतुश्चत्वारिंशच्चमे चतुश्चत्वारिं- शच्चमेष्टाचत्वारिंशच्चमे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।

शून्य के पर्याय

खम्, गगन, आकाश, अम्बर, अभ्र, वियत्, व्योम, अंतरिक्ष, नभ, पूर्णम्, रन्ध्र, विष्णुपद, जलधरपथ आदि पर्यायवाची शब्द 'शून्य' के लिए प्रयुक्त हुये हैं तो संख्या के लिए अंक भी कुछ ही वर्षों के अन्दर ढूँढ़ लिये गये होंगे। अतः भारतवर्ष में अंकोत्पत्ति का इतिहास उतना ही पुराना है जितना वेदों का काल प्राचीन है।

अङ्कस्थान

यजुर्वेद संहिता के सत्तरहवें अध्याय में विशाल संख्या को व्यवस्थित कर उनकी अंकस्थान संज्ञा निर्धारित की गई है। यह निम्नलिखित रूप में है-

एक, दश, शत, सहस्र, दश सहस्र, अयुत, दश अयुत, नियुत, दश नियुत, प्रयुत, दश प्रयुत, अंर्बुद, दश अर्बुद, समुद्र, दश समुद्र, मध्य, दश मध्य, अन्त, दश अन्त, परार्ध।।

यहाँ १,००,००,००,००,००,००,००,००,००,० अङ्क स्थान तक संज्ञा का निर्धारण हुआ है।

इससे सिद्ध होता है कि वेद काल में ही २० अंक स्थान तक की गिनती सुनिश्चित हो चुकी थी। संज्ञा के निर्धारण में बाद में काफी फेर बदल भी हुआ है; पर २० अंक स्थान से अधिक संज्ञा बढ़ाने की चेष्टा किसी भी गणितज्ञ द्वारा नहीं की गई।

अंकों में 'कोटि' शब्द का प्रयोग हुआ तो ज्योतिष और ज्यामिति में भी भुज और कोटि का प्रचलन दिखलाई दिया।

भास्कराचार्य की लीलावती में १८ अंक स्थान तक की संज्ञा दी गयी है; जो निम्नलिखित है-

एक-दश-शत-सहस्रा-ऽयुत-लक्ष-प्रयुत-कोट्यः क्रमशः।
अर्बुदम् - अब्जं - खर्व - निखर्व - पहापद्म - शङ्कवस्तस्मात्।।
जलधिश्चान्त्यं मध्यं परार्धमिति दशगुणोत्तराः संज्ञाः।
संख्याया स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैः।।

अङ्क या संख्या का स्थान निर्धारण व्यवहार के लिए पूर्वाचार्यों ने किया है। ये हैं- एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, प्रयुत, कोटि, अर्बुद, अब्ज, खर्व, निखर्व, महापद्म, शंकु, जलधि, अन्त्य, मध्य, परार्ध। ये कुल १८ स्थान हैं। हिन्दु गणित में व्यवहार में २० अङ्क स्थान हमेशा प्रचलित रहे हैं। इनकी वर्तमान-कालिकी स्थानसंज्ञा निम्नवत् है-

१	एक	(इकाई)	१
२	दश	(दहाई)	१०
३	शत	(सैकड़ा)	१००
४	सहस्र	(हजार, सहस्त्रार)	१०००
५	दश सहस्र	(दश हजार)	१००००
६	लक्ष	(लाख)	१०००००
७	दश लक्ष	(दश लाख)	१००००००
८	कोटि	(करोड़)	१०००००००
९	दशकोटि	(दश करोड़)	१००००००००
१०	अर्बुद	(अरब)	१०००००००००
११	अश अर्बुद	(दश अरब)	१००००००००००
१२	खर्व	(खरब)	१०००००००००००
१३	शद खर्व	(दश खरब)	१००००००००००००
१४	नील	(नील)	१०००००००००००००
१५	दश नील	(दश नील)	१००००००००००००००
१६	पद्म	(पद्म)	१०००००००००००००००
१७	दशपद्म	(दश पद्म)	१००००००००००००००००
१८	शङ्ख	(शंख)	१०००००००००००००००००
१९	दश शङ्ख	(दश शंख)	१००००००००००००००००००
२०	महा शङ्ख	(महा शंख)	१०००००००००००००००००००

बाद में जलधि (समुद्र), मध्य और अन्त्य की संज्ञा को बदल कर नील, पद्म, शंख कर दिया गया है। वैदिक शब्द 'परार्ध' श्रेष्ठ शब्द है। इसमें 'अर्धस्य पारम्' का भाव निहित है, अर्थात् लक्ष्यप्राप्ति। अङ्क स्थान की पूर्णता का वाचक है परार्ध। शंख जलधि से उत्पन्न है; पूर्णता का वाचक नहीं है।

वैदिक ज्ञान समृद्धि में न्यूनता और अपूर्णता खोजने वाले इतिहासकारों के द्वारा यह घोषित करना कि 'शून्य बहुत बाद में खोजा गया' एक मूर्खतापूर्ण विद्वेषभाव का परिचायक है। भारतवर्ष में अंकों की परम्परा वैदिक ज्ञान की धारा से ही पुष्ट हुयी है। अंकों का सनातन संस्कृति में इतना समादर है कि ये ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु, शक्ति आदि के अर्थ में भी रुढ़ हो गये। अपने अंकों को बचाना, उन्हें जीवित रखना अपनी संस्कृति को जीवित रखने के तुल्य है।



हिन्दू संस्कृति के अंक प्रतीक

(१)

एक

ब्रह्म

एकध्वनि

ॐ

एकचक्र

सूर्यरथ

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति

(उस एक ब्रह्म को ऋषिगण बहुत प्रकार से कहते हैं)



सोऽकामयत् एकोऽहं बहुस्याम

(उस ब्रह्म ने संकल्प लिया मैं एक ही अनेक हो जाऊँ)



एकेन ज्ञातेन सर्वं विज्ञातं भवति

(उस एक ब्रह्म को जान लेने से सब कुछ विज्ञात हो जाता है)



एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा

(देवी ने कहा- मैं सृष्टि में अकेली हूँ। मुझसे अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है)



एकत्वमनुपश्यतः

(सभी में उस एक ब्रह्म का दर्शन करें)

द्वि अयन

(१) सौम्यायन (२) याम्यायन

द्वि गोल

(१) सौम्य गोल (२) याम्य गोल

द्विपक्ष

(१) शुक्लपक्ष (२) कृष्णपक्ष

ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ग्रन्थ

(१) ऐतरेय ब्राह्मण (२) शांखायन ब्राह्मण

दो मुख्य तत्त्व

(१) जड़ (२) चेतन

दो मूल कारण

(१) प्रकृति (२) पुरुष

२ भाग

(१) दक्षिण (२) वाम

अथवा

(१) सव्य (२) अपसव्य

२ काल

(१) लोक अन्तकृत् (यम) (२) कलनात्मक (गणनीय)

द्वैत

(१) ब्रह्म (२) जीव

दो आयाम

(१) देश (स्थान) (२) काल (समय)

दो प्रतिमायें

(१) ध्रुव बेर (२) चल बेर

दो नृत्य

(१) ताण्डव (२) लास्य

(३)

तीन अग्नि

(१) गार्हपत्य (२) आहवनीय (३) दक्षिण

अथवा

(१) जठराग्नि (२) वाडवाग्नि (३) दवाग्नि

त्रिकाल

(१) भूत (२) भविष्य (३) वर्तमान

त्रिकाल (सन्ध्या)

(१) प्रातः (२) मध्याह्न (३) सायं

प्रस्थानत्रय (वेदान्त)

(१) उपनिषद् (२) ब्रह्मसूत्र (३) भगवद्गीता

त्रिपिटक (बौद्ध)

(१) सुत्त-पिटक (२) विनय-पिटक (३) अभिधम्मपिटक

तीन ऋण

(१) देव ऋण (२) पितृ ऋण (३) ऋषि ऋण

त्रिनाड़ी

(१) इडा (२) पिंगला (३) सुषुम्णा

त्रिगुण

(१) सत् (२) रज (३) तम

त्रिदोष

(१) वात (२) पित्त (३) कफ

त्रिस्कन्ध ज्योतिष

(१) सिद्धान्त (२) संहिता (३) होरा

त्रिताप

(१) दैहिक (२) दैविक (३) भौतिक

त्रयी (वेद)

(१) ऋक् (२) यजुः (३) साम

त्रिज्येष्ठ

(१) ज्येष्ठ वर (२) ज्येष्ठ कन्या (३) ज्येष्ठ मास

त्रिभुवन

(१) पृथ्वी (भूः) (२) पाताल (भुवः) (३) स्वर्ग (स्वः)

त्रि आचमन

(१)ॐ केशवाय नमः (२)ॐ नारायणाय नमः (३)ॐ माधवाय नमः

त्रिधाम (तेज)

(१) सूर्य (२) चन्द्र (३) अग्नि

त्रिनेत्र (शिव)

(१) दक्षिणनेत्र (सूर्य) (२) वामनेत्र (चन्द्र) (३) मध्यनेत्र (अग्नि)

त्रिस्थली

(१) काशिका (२) गया (३) प्रयाग

त्रिलोक

(१) आकाश (२) पृथ्वी (३) पाताल

सृष्टि के तीन भेद

(१) अध्यात्म (२) अधिभूत (३) अधिदैव

त्रिमधु

(१) दूध (२) शक्कर (३) शहद

त्रिदेव

(१) ब्रह्मा (२) विष्णु (३) महेश

त्रिविध मोक्ष

(१) वैकृतिक (२) दाक्षिणिक (३) प्राकृतिक

त्रिशक्ति

(१) महाकाली (२) महालक्ष्मी (३) महासरस्वती

त्रि शब्दवृत्तियाँ

(१) अभिधा (२) लक्षणा (३) व्यञ्जना

तीन राम

(१) परशुराम (२) राम (३) बलराम

त्रिरत्न

(१) बुद्ध (२) संघ (३) धर्म

तीन प्राणायाम प्रकार

(१) कुम्भक (२) रेचक (३) पूरक

त्रिमुनि

(१) पाणिनि (२) कात्यायन (३) पतञ्जलि

त्रिधृति

(१) सात्विकी (२) राजसी (३) तामसी

(४)

चार वेद

(१) ऋग्वेद (२) यजुर्वेद (३) सामवेद (४) अथर्ववेद

वेद के चार प्रकार

(१) संहिता (२) ब्राह्मण (३) आरण्यक (४) उपनिषद्

चार ऋत्विज्

(१) होता (ऋक्) (२) अध्वर्यु (यजु:)
(३) उद्गाता (साम) (४) ब्रह्मा (अथर्व)

चार उपवेद

(१) आयुर्वेद (२) धनुर्वेद (३) गन्धर्ववेद (४) स्थापत्यवेद

चार आश्रम

(१) ब्रह्मचर्य (२) गार्हस्थ्य (३) वानप्रस्थ (४) संन्यास

चतुर्विध ऋषि

(१) ऋषि (ऋषिका) (२) ऋषिपुत्र (३) देवर्षि (४) महर्षि

चार पुण्यशाली

(१) आर्त (२) जिज्ञासु (३) अर्थार्थी (४) ज्ञानी

चार वाणी

(१) परा (२) पश्यन्ती (३) मध्यमा (४) वैखरी

चार सम्प्रदाय (बौद्ध)

(१) वैभाषिक (२) सौत्रान्तिक (३) योगाचार (४) माध्यमिक

चार युग

(१) सत्ययुग (२) त्रेतायुग (३) द्वापरयुग (४) कल्कियुग

चतुर्युग प्रमाण

(१) कलियुग ४,३२,००० वर्ष (२) द्वापरयुग, ८,६४,००० वर्ष
(३) त्रेतायुग १२,९६,००० वर्ष (३) सत्ययुग १७,२८,००० वर्ष
(कुल योग = ४३ लाख २० हजार वर्ष)

सेना के चार अङ्ग

(१) हाथी (२) घोड़ा (३) रथ (४) पैदल

चतुर्व्यूह (विष्णु)

(१) वासुदेव (२) संकर्षण (३) प्रद्युम्न (४) अनिरुद्ध

चार वर्ण

(१) ब्राह्मण (२) क्षत्रिय (३) वैश्य (४) शूद्र

पुरुषार्थ चतुष्टय

(१) धर्म (२) अर्थ (३) काम (४) मोक्ष

चार नायक

(१) धीरोदात्त (२) धीरोद्धत (३) धीरललित (४) धीरप्रशान्त

चार नायिकायें

(१) शंखिनी (२) पद्मिनी (३) चित्रिणी (४) हस्तिनी

चार महावाक्य

(१) प्रज्ञानं ब्रह्म (२) अहं ब्रह्माऽस्मि
(३) तत्त्वमसि (४) अयमात्मा ब्रह्म

चार शाङ्करमठ

(१) शारदा (द्वारका) (२) गोवर्द्धन (पुरि)
(३) ज्योतिः (बदरिकाश्रम) (४) शृङ्गेरी

चार महाकुम्भ

(१) प्रयाग (२) हरिद्वार (३) उज्जैन (४) नासिक

चार धाम

(१) बदरी (२) पुरी (३) रामेश्वर (४) द्वारका

चार तीर्थ (बौद्ध)

(१) लुम्बिनी (२) गया (३) सारनाथ (४) कुशीनगर

चार सामगान

(१) वेय गान (२) आरण्य गान (३) ऊह गान (४) उह्य गान

चार प्रमाण (न्याय दर्शन)

(१) प्रत्यक्ष (२) अनुमान (३) उपमान (४) शाब्द (आगम)

चार सिद्धान्त (न्याय दर्शन)

(१) सर्वतन्त्र (२) प्रति तन्त्र (३) अधिकरण (४) अभ्युपगम

अनुबन्ध चतुष्ट्य (वेदान्त)

(१) अधिकारी (२) विषय (३) सम्बन्ध (४) प्रयोजन

चार आर्यसत्य (बौद्ध)

(१) दु:ख (२) दु:खसमुच्चय (३) दु:खनिरोध
(४) दु:खनिरोधगामिनीप्रतिपद्

चार प्रतिमायें

(१) योग (२) भोग (३) वीर (४) आभिचारिक

४ नीतियाँ

(१) साम (२) दाम (३) दण्ड (४) भेद

चार पाद (धनुर्वेद)

(१) मन्त्रमुक्त (२) पाणिमुक्त (३) मुक्तामुक्त (४) अवमुक्त

अथवा

(१) सूत्र (२) शिक्षा (३) प्रयोग (४) रहस्य

४ प्रकार के हाथी

(१) भद्र (२) मन्द्र (३) मृग (४) मिश्र

पञ्चरत्न

(१) स्वर्ण (२) चाँदी (३) मोती (४) लाजवर्त
(५) प्रवाल

अथवा

(१) कनक (२) कुलिश (हीरा) (३) नील (नीलम)
(४) पुखराज (५) मोती

पञ्चपल्लव

(१) अश्वत्थ (पीपल) (२) उदुम्बर (गूलर) (३) प्लक्ष (पाकड़)
(४) चूत (आम्र) (५) न्यग्रोध (बरगद)

पञ्चगव्य

(१) गोमूत्र (२) गोमय (गोबर) (३) गोक्षीर
(४) गोदधि (५) गोघृत

पञ्चामृत

(१) दूध (२) दही (३) घी (४) शहद
(५) शक्कर

पञ्चध्यानी (बुद्ध)

(१) अक्षोभ्य (२) अमिताभ (३) वैरोचन (४) अमोघसिद्धि
(५) रत्नसम्भव

पञ्चाग्नि

(१) अन्वाहार्य (२) पचनं (३) गार्हपत्य
(४) आहवनीय (५) आवसथ्य

पञ्च ज्ञानेन्द्रिय

(१) चक्षु (२) नाक (३) कान (४) त्वचा
(५) रसना

पञ्चकर्मेन्द्रिय

(१) वाक् (२) हस्त (३) पाद (४) पायु
(५) उपस्थ

पञ्चाङ्ग (ज्योतिष)

(१) तिथि (२) वार (३) नक्षत्र (४) योग (५) करण

पञ्चाङ्ग (राजशास्त्र)

(१) सहाय (२) साधन (३) उपाय (४) देशकाल (५) विपत्निरोध

पञ्चाङ्ग (कर्मकाण्ड)

(१) स्वस्ति (२) मातृका (३) वसोर्धारा (४) आयुष्यमंत्र (५) नान्दीश्राद्ध

पञ्चाङ्ग (पुरश्चरण)

(१) जप (२) होम (३) तर्पण (४) मार्जन (५) ब्रंह्मभोजन

पञ्चशाखा ऋग्वेद

(१) शाकल (२) बाष्कल (३) आश्वलायन (४) शांखायन (५) माण्डूक्य

पञ्चनिकाय (बौद्ध)

(१) दीघ निकाय (२) मज्झिम निकाय (३) संयुत्त निकाय (४) अंगुत्तर निकाय (५) खुद्दक निकाय

पञ्चमहाव्रत (जैन)

(१) अहिंसा (२) अमृषा (३) अस्तेय (४) अपरिग्रह (५) ब्रह्मचर्य

कामदेव के पञ्चबाण

(१) अरविन्द (२) अशोक (३) आम्र (४) नवमल्लिका (५) नीलकमल

कामदेव के बाणों के धर्म

(१) सम्मोहन (२) उन्मादन (३) शोषण (४) तापन (५) स्तम्भन

पञ्चोपचार (पूजन साधन)

(१) गंध (२) पुष्प (३) धूप (४) दीप
(५) नैवेद्य

पञ्चकन्यायें

(१) अहल्या (२) द्रौपदी (३) कुन्ती (४) तारा
(५) मंदोदरी

पञ्चचिकित्सा

(१) वमन (२) रेचन (३) नस्य (४) अनुवासन
(५) निरूह

पञ्चकोष

(१) अन्नमय कोष (२) प्राणमयकोष (३) मनोमयकोष
(४) विज्ञानमयकोष (५) आनन्दमयकोष

पञ्चगङ्गा

(१) गंगा (२) यमुना (३) सरस्वती (४) किरणा
(५) धूतपापा

पञ्चगुण, पञ्चतन्मात्रायें

(१) रूप (२) रस (३) गन्ध (४) स्पर्श
(५) शब्द

पाँच वृत्तियाँ

(१) प्रमाण (२) विपर्यय (३) विकल्प (४) निद्रा (५) स्मृति

पञ्च पर्वा अविद्या
(पाँच गाँठ वाली अविद्या)

(१) अविद्या (२) अस्मिता (३) राग (४) द्वेष (५) अभिनिवेश

पञ्चतत्त्व, पञ्चमहाभूत

(१) पृथ्वी (२) जल (३) तेज (४) वायु
(५) आकाश

पञ्चमकार (तन्त्र)

(१) मद्य (२) मांस (३) मत्स्य (४) मुद्रा
(५) मैथुन

पञ्चदेवता

(१) आदित्य (२) गणेश (३) देवी (४) रुद्र
(५) विष्णु

पञ्चानन शिव

(१) सद्योजात (२) तत्पुरुष (३) अघोर (४) वामदेव
(५) ईशान

पञ्चगौड़ (उत्तर भारत)

(१) सारस्वत (२) कान्यकुब्ज (३) गौड़
(४) मैथिल (५) उत्कल

पञ्चद्राविण (दक्षिण भारत)

(१) महाराष्ट्र (२) तैलंग (३) कर्णाटक (४) गुर्जर
(५) द्राविण

पञ्चपिता

(१) पिता (२) दीक्षापिता (३) श्वसुर (४) अन्नदाता
(५) भयत्राता

द्रौपदी के पञ्चपुत्र

(१) प्रतिविन्ध्य (२) सुतसोम (३) श्रुतकर्मा (४) शतानीक
(५) श्रुतसेन

शरीरस्थपञ्च वायु

(१) प्राण (२) अपान (३) व्यान (४) उदान
(५) समान

पञ्च उपप्राण

(१) नाग (२) देवदत्त (३) कृकल (४) कूर्म
(५) धंनञ्जय

पञ्चमहापातक

(१) ब्रह्महत्या (२) सुरापान (३) चौरकर्म
(४) गुरुपत्नी गमन (५) इनका सहवासी

पञ्चमहायज्ञ

(१) स्वाध्याय (ब्रह्म) यज्ञ (२) पितृयज्ञ (३) देवयज्ञ
(४) भूत (बलिवैश्व) यज्ञ (५) नृ (अतिथि) यज्ञ

पञ्च नृपयज्ञ

(१) दुष्ट दण्ड (२) सुजनरक्षा (३) कोश संवृद्धि (४) अपक्षपात
(५) राष्ट्ररक्षा

पञ्चवटी

(१) अश्वत्थ (२) विल्व (३) वट (४) आँवला
(५) अशोक

पञ्चबलि

(१) गो (२) श्वान (३) काक (४) देव
(५) पिपीलिका (चींटी)

स्वर्गीय पञ्चवृक्ष

(१) मन्दार (२) पारिजात (३) सन्तान (४) कल्पवृक्ष
(५) हरिचन्दन

पंचनद

(१) सिन्धु (२) रावी (३) चिनाव (४) व्यास
(५) झेलम

पञ्चलोकपाल

(१) गणेश (२) दुर्गा (३) वायु (४) आकाश
(५) अश्विनीकुमार

पञ्चधान्य

(१) तिल (२) यव (३) मूँग (४) उड़द
(५) तण्डुल

पञ्चशिला

(१) नन्दा (२) भद्रा (३) जया (४) रिक्ता
(५) पूर्णा

पञ्चकुम्भ (शिलान्यास)

(१) पद्म (२) महापद्म (३) शंख (४) विजय
(५) सर्वतोभद्र

पञ्चाङ्गुलि

(१) कनिष्ठिका (२) अनामिका (३) मध्यमा (४) तर्जनी
(५) अङ्गुष्ठ

पञ्च लगधसूत्र (ज्योतिष)

(१) अवकहड (२) मटपरत (३) नयभजख (४) गसदचल
(५) अइउएओ

पञ्च यक्ष

(१) केवल (२) हरिकेश (३) कपिल (४) काञ्चन
(५) मेघमाली प्रचेतस के पुत्र ही यक्ष बने।

पञ्च कारु (कारीगर)

(१) तक्षा (बढ़ई) (२) तंतुवाय (जुलाहा) (३) नापित (नाई)
(४) रजक (धोबी) (५) चर्मकार

पञ्च कर्म अवस्था (यास्क)

(१) जन्म (२) स्थिति (३) वृद्धि (४) विपरिणमन
(५) अपक्षय(नाश)

५ शास्त्र अधिकरण

(१) विषय (२) संशय (३) पूर्वपक्ष (४) उत्तरपक्ष
(५) निर्णय (सिद्धान्त)

पंच तीर्थ

(१) विश्रांति (२) शौकर (३) नैमिष (४) प्रयाग
(५) पुष्कर

पंच अवस्थायें

(१) उत्क्षेपण (२) अपक्षेपण (३) आकुञ्चन (४) प्रसारण
(५) गमन

पंच तृण

(१) कुश (२) कास (३) सरकंडा (४) डाभ
(५) ईख

पञ्च दीर्घ अवयव (शरीर)

(१) नेत्र द्वय (२) बाहू द्वय (३) कुक्षि (पेट) (४) नासिका द्वय
(५) वक्ष

(६)

षड् रस

(१) मधुर (२) अम्ल (३) लवण (४) कषाय
(५) तिक्त (६) कटु

षट्चक्र (योग)

(१) मूलाधार (२) अधिष्ठान (३) मणिपुर (४) अनाहत
(५) विशुद्ध (६) आज्ञा 'सहस्रार' को सिद्धि चक्र मानते हैं।

षड्दर्शन

(१) सांख्य (२) योग (३) न्याय (४) वैशेषिक
(५) मीमांसा (६) वेदान्त

षट् कृत्तिकायें (वैदिक)

(१) अम्बा (२) दुला (३) नियन्ती (४) मेघयन्ती
(५) वर्षयन्ती (६) चुपणिका

षट् कृत्तिकायें (पौराणिक)

(१) सम्भूति (२) अनुसूया (३) क्षमा (४) प्रीति
(५) सन्नति (६) अरुन्धती

षट् शास्त्र

(१) व्याकरण (२) ज्योतिष (३) निरुक्त (४) कल्प
(५) शिक्षा (६) छन्द

षड् ऋतु

(१) वसन्त (२) ग्रीष्म (३) वर्षा (४) शरद्
(५) हेमन्त (६) शिशिर

षड् आततायी

(१) अग्निदः (२) विषदः (३) शस्त्रपाणि (४) धनहर्त्ता
(५) क्षेत्रहर्त्ता (६) पत्नीहर्त्ता

षड् इति (पैदावार भय)

(१) अतिवृष्टि (२) अनावृष्टि (३) मूषक (४) शलभ
(५) शुक (६) अत्यासन्न (पशु, चौर आदि)

षट् कर्म (तन्त्र)

(१) मारण (२) सम्मोहन (३) वशीकरण (४) संस्तम्भन
(५) उच्चाटन (६) विद्वेषण

षडङ्ग (न्यास)

(१) हृदय (२) शिर (३) शिखा (४) कवच (स्कन्धद्वय)
(५) नेत्रद्वय (६) अस्त्र (शिरः प्रदक्षिणा)

षड् लक्षणा (साहित्य)

(१) उपादान लक्षणा (२) लक्षण लक्षणा
(३) गौडी सारोपा लक्षणा (४) शुद्धा सारोपा लक्षणा
(५) गौडी साध्यवसाना लक्षणा (६) शुद्धासाध्यवसाना लक्षणा

षट् कर्म (गणित)

(१) योग (२) वियोग (३) गुणा (४) भाग
(५) वर्ग (६) वर्गमूल

षट्तिला तिथि

(१) तिल स्नान (२) तिल उबटन (३) तिल होम
(४) तिलोदक पान (५) तिल भोजन (६) तिल दान

षड्दोष

(१) निद्रा (२) तन्द्रा (३) भय (४) क्रोध
(५) आलस्य (६) दीर्घसूत्रता

षट् गुण (राजशास्त्र)

(१) संधि (२) विग्रह (३) यान (आक्रमण)
(४) आसन (५) द्वैधीभाव (६) समाश्रय

षट् सुख

(१) अर्थागम (२) अरोगिता (३) प्रिया (अनुकूलपत्नी)
(४) प्रियवादिनी भार्या (५) वश्य पुत्र (६) अर्थकरी विद्या

६ गरुड़ पुत्र

(१) सुमुख (२) सुनामा (३) सुनेत्र (४) सुवर्चा
(५) सुरुच (६) सुबल

षड्वर्ग

(१) काम (२) क्रोध (३) लोभ (४) मोह
(५) मद (६) मत्सर

षट् प्रज्ञ

(१) अधर्मज्ञ (२) अर्थज्ञ (३) कामज्ञ (४) मोक्षज्ञ
(५) लोकज्ञ (६) तत्त्वज्ञ

(७)

सप्तधातु

(१) स्वर्ण (२) चाँदी (३) ताँबा (४) आरकूट(पीतल)
(५) लोहा (६) त्रपु (७) सीसा

शारीरिक सप्तधातु

(१) रक्त (२) पित्त (३) वसा (४) मांस
(५) अस्थि (६) मज्जा (७) शुक्र

सप्तधान्य

(१) यव (२) गोधूम (३) तिल (४) कंगु
(५) श्यामाक (सांवा) (६) चीन (७) धान

सप्तमृत्तिका

(१) घोड़साल की (२) हाथीसाल की (३) बाँबी की
(४) रथचक्र की (५) संगम की (६) तालाब की
(७) गोशाला की

सप्त समुद्र

(१) लवण (२) इक्षु (३) सुरा (४) सर्पि:
(५) दधि (६) क्षीर (७) शुद्धोदक

सप्त द्वीप

(१) जंबू (२) प्लक्ष (३) कुश (४) क्रौञ्च
(५) शाक (६) शाल्मलि (७) पुष्कर

सप्त कल्प

(१) पार्थिव (२) कूर्म (३) प्रलय (४) अनन्त
(५) श्वेतवराह (६) ब्राह्म (७) सावित्र

सप्तर्षि

(१) मरीचि (२) अत्रि (३) अंगिरा (४) पुलस्त्य
(५) पुलह (६) क्रतु (७) वसिष्ठ

सप्तपुरी

(१) अयोध्या (२) मथुरा (३) हरिद्वार (माया) (४) काशी
(५) काञ्ची (६) उज्जैनी (७) द्वारकापुरी

सप्त चिरंजीवि

(१) अश्वत्थामा (२) बलि (३) व्यास (४) हनुमान
(५) विभीषण (६) कृपाचार्य (७) परशुराम
आठवें चिरंजीवि मार्कण्डेय मुनि को मानते हैं।

चक्रव्यूह के सप्त महारथी

(१) जयद्रथ (२) द्रोण (३) कृपाचार्य (४) कर्ण
(५) अश्वत्थामा (६) बृहद्बल (७) कृतवर्मा

सप्त पितृगण

(१) कव्यवाह (२) अनल (३) सोम (४) यम
(५) अर्यमा (६) अग्निष्वात्त (७) बर्हिषद्

सप्तलोक मातायें

(१) ब्राह्मी (२) माहेश्वरी (३) कौमारी (४) वैष्णवी
(५) वाराही (६) इन्द्राणी (७) चामुण्डा

सप्त अप्सरायें

(१) घृताची (२) मेनका (३) रम्भा (४) उर्वशी
(५) तिलोत्तमा (६) सुकेशी (७) मञ्जुघोषा

सप्तमेघ

(१) पुष्कर (२) आवर्त (३) द्रोण (४) संवर्त
(५) काल (६) नीलक (७) वरुण

सप्तवायु

(१) प्रवह (२) आवह (३) उद्वह (४) संवह
(५) विवह (६) परिवह (७) परावह
(इन सात वायु के एक ज्योति, द्विज्योति, त्रिज्योति आदि सप्तज्योति भेद से ४६ वायु होते हैं, इनके नाम ४६ अंक में देखें।)

सप्त ऊर्ध्वलोक

(१) भूर्लोक (२) भुवर्लोक (३) स्वर्लोक (४) महर्लोक
(५) जन: लोक (६) तपोलोक (७) सत्यलोक

सप्त अध: लोक

(१) अतल (२) वितल (३) सुतल (४) रसातल
(५) तलातल (६) महातल (७) पाताल

सप्तप्रकृति (राज्य)

(१) राजा (२) मन्त्री (३) सामन्त (४) देश
(५) कोष (६) दुर्ग (७) सेना

सप्तपर्वत

(१) मलय (२) महेन्द्र (३) हिमालय (४) सह्याद्रि
(५) रैवतक (६) विन्ध्य (७) अरावली

सप्तस्वर

(१) षड्ज (२) ऋषभ (३) गान्धार (४) मध्यम
(५) पञ्चम (६) धैवत (७) निषाद 'स रे ग म प ध नि'

सप्तवार

(१) रवि (२) सोम (३) मंगल (४) बुध
(५) गुरु (६) शुक्र (७) शनि

सप्तशक

(१). युधिष्ठिर (२) विक्रम (३) शालिवाहन (४) विज़य
(५) अभिनन्दन (६) नागार्जुन (७) कलि

सप्तविध सामगान

(१) हिंकार (२) प्रस्ताव (३) आदि (४) उद्गीथ
(५) प्रतिहार (६) उपद्रव (७) निधन

सप्त जिह्वा अग्नि

(१) काली (२) कराली (३) मनोजवा (४) सुलोहिता
(५) सुधूम्र वर्णा (६) विस्फुलिङ्गिनी (७) विश्वरुचि

सप्तभेद (प्रणव, ॐ)

(१) अ (२) उ (३) म (४) अर्धमात्रा
(५) नाद (६) विन्दु (७) शक्ति

सप्तकाण्ड (श्रीरामचरितमानस)

(१) बालकाण्ड (२) अयोध्याकाण्ड (३) अरण्यकाण्ड
(४) किष्किन्धाकाण्ड (५) सुन्दरकाण्ड (६) लङ्काकाण्ड
(७) उत्तरकाण्ड

बाल्मीकीयरामायणम् में लङ्काकाण्ड की जगह युद्धकाण्डम् है।

७ (सप्त) सूर्यपुत्र

(१) अश्विनी कुमार (२) शनि (३) सावर्णि मनु
(४) यम (५) जटायु (६) सुग्रीव
(७) कर्ण सूर्यपुत्री यमुना को कहा जाता है।

(८)

अष्ट वसु

(१) आप (अह) (२) ध्रुव (३) सोम (४) धव (धर)
(५) अनिल (६) अनल (७) प्रत्यूष (८) प्रभास

अष्टसिद्धियाँ

(१) अणिमा (२) लघिमा (३) प्राप्ति (४) प्रकाम्य
(५) महिमा (६) ईशित्व (७) वशित्व (८) कामावसायिता

अष्टाङ्गयोग

(१) यम (२) नियम (३) आसन (४) प्राणायाम
(५) प्रत्याहार (६) धारणा (७) ध्यान (८) समाधि

अष्ट धातु

(१) सोना (२) चाँदी (३) ताँबा (४) राँगा
(५) सीसा (६) जस्ता (७) लोहा (८) पारा

अष्टांग आयुर्वेद

(१) शल्य (२) शालाक्य (३) कायचिकित्सा (४) भूतविद्या
(५) कौमारभृत्य (६) अगदतंत्र (७) रसायन तंत्र (८) बाजीकरण

अष्टाङ्ग पिण्ड

(१) अन्न (२) तिल (३) जल (४) दूध
(५) घी (६) मधु (७) धूप (८) दीप

अष्ट महादान

(१) तिल (२) लोहा (३) सोना (४) कर्पास
(५) नमक (६) सप्तधान्य (७) भूमि (८) गौ

साष्टाङ्गप्रणाम

(१) हाथ (२) पैर (३) घुटना (४) वक्ष
(५) सिर (६) दृष्टि (७) मन (८) वाणी

दोर्भ्यां पदाभ्यां जानुभ्यामुरसा शिरसा दृशा।
मनसा वचसा चेति प्रणामोऽष्टाङ्ग ईरितः।।

(इन्हीं आठ अंगों से पूज्य व्यक्ति को प्रणाम करने की प्राचीन परम्परा रही है)

अष्ट विवाह

(१) ब्राह्म (२) दैव (३) प्राजापत्य (४) आर्ष
(५) गान्धर्व (६) आसुर (७) राक्षस (८) पैशाच

अष्टाङ्गमैथुन

(१) दर्शन (२) स्पर्शन (३) केलि (४) स्मरण
(५) गुह्य सम्भाषण (६) संकल्प (७) अध्यवसाय (८) क्रियानिवृत्ति

अष्ट प्रकृति (गीता)

(१) भूमि (२) जल (३) अग्नि (४) वायु
(५) आकाश (६) मन (७) बुद्धि (८) अहंकार

अष्टविकृतियाँ (वेद)

(१) जटा (२) माला (३) शिखा (४) रेखा
(५) ध्वज (६) दण्ड (७) रथ (८) घन

अष्ट आसन (जप हेतु)

(१) स्वस्तिकासन (२) सिद्धासन (३) समासन (४) पद्मासन
(५) बद्धपद्मासन (६) वीरासन (७) गोमुखासन (८) वज्रासन

अष्ट आत्मगुण

(१) सर्वभूतदया (२) क्षान्तिः (३) अनसूया (४) शौच
(५) अनायास (६) मंगल (७) अकार्पण्य (८) अस्पृहा

अष्ट प्रकृति (सांख्य)

(१) मूल प्रकृति (२) महत् तत्त्व (३) अहंकार (४) शब्द
(५) स्पर्श (६) रूप (७) रस (८) गन्ध

अष्ट भैरव

(१) असितांग	(२) रुरु	(३) चण्ड	(४) क्रोध
(५) उन्मत्त	(६) कपालि	(७) भीषण	(८) संहार

अष्ट नाग

(१) अनंत	(२) वासुकि	(३) तक्षक	(४) कर्कोटक
(५) पद्म	(६) महापद्म	(७) शंखपाल	(८) कुलिक

अष्ट भोग

(१) सुगन्ध	(२) वनिता	(३) वस्त्र	(४) गीत
(५) ताम्बूल	(६) भोजन	(७) वाहन	(८) मंदिर

अष्ट आयुध

(१) वज्र	(२) शक्ति	(३) दण्ड	(४) खड्ग
(५) पाश	(६) अंकुश	(७) गदा	(८) त्रिशूल

अष्ट दिग्गज

(१) ऐरावत	(२) पुण्डरीक	(३) वामन	(४) कुमुद
(५) अञ्जन	(६) पुष्पदन्त	(७) सार्वभौम	(८) सुप्रतीक

अष्ट मंगलचिह्न

(१) स्वस्तिक	(२) श्रीवत्स	(३) नंद्यावर्त	(४) वर्धमानक
(५) भद्रासन	(६) कलश	(७) दर्पण	(८) मत्स्य युग्म

अष्ट गुण

(१) प्रज्ञा	(२) कुलीनता	(३) श्रुत	(४) दम
(५) पराक्रम	(६) अल्पभाषिता	(७) दान	(८) कृतज्ञता

अष्टविध मृत्यु

(१) व्यथा	(२) दुःख	(३) भय	(४) लज्जा
(५) रोग	(६) शोक	(७) बन्धन	(८) अवमान

अष्टमार्ग (बौद्धधर्म)

(१) सम्यग् दृष्टि	(२) सम्यक् संकल्प	(३) सम्यग् वाक्
(४) सम्यक् कर्म	(५) सम्यग् आजीव	(६) सम्यग् व्यायाम
(७) सम्यक् स्मृति	(८) सम्यक् समाधि	

अष्ट यज्ञद्रव्य

(१) पीपल (२) गूलर (३) पाकड़ (४) बरगद
(५) तिल (६) सरसों (७) पायस (८) घृत

अष्ट मंत्री

(१) प्रधान (२) अमात्य (३) सचिव (४) मंत्री
(५) धर्माध्यक्ष (६) न्यायशास्त्री (७) वैद्य (८) सेनापति

८ अष्ट गण (छन्दः शास्त्र)

(१) य गण (२) म गण (३) त गण (४) र गण
(५) ज गण (६) भ गण (७) न गण (८) स गण

अष्टधा गति (ग्रहों की)

(१) वक्रा (२) अनुवक्रा (३) विकला (४) मन्दा
(५) मन्दतरा (६) समा (७) शीघ्रतरा (८) शीघ्रा

(९)

नवनिधियाँ

(१) महापद्म (२) पद्म (३) शंख (४) मकर
(५) कच्छप (६) मुकुंद (७) कुंद (८) नील
(९) खर्व

नौ प्रकार के विष

(१) वत्सनाभ (२) हारिद्रक (३) सक्तुक (४) प्रदीपन
(५) सौराष्ट्रिक (६) श्रृंगक (७) कालकूट (८) हलाहल
(९) ब्रह्मपुत्र

नवगण

(१) आदित्य (२) विश्व (३) वसु (४) तुषित
(५) आभास्वर (६) अनिल (७) महाराजिक (८) साध्य
(९) रुद्र

नवग्रह

(१) सूर्य (२) चन्द्र (३) मंगल (४) बुध
(५) गुरु (६) शुक्र (७) शनि (८) राहु
(९) केतु

नवरत्न

(१) माणिक्य (२) मुक्ता (३) प्रवाल (४) मरकत(पन्ना)
(५) पुखराज (६) हीरा (७) नीलम (८) गोमेदक
(९) वैदूर्यमणि (लहसुनिया)

नवरत्न (विक्रमादित्य सभा)

(१) धन्वन्तरि (२) क्षपणक (३) अमरसिंह (४) शंकु
(५) वेतालभट्ट (६) घटखर्पर (७) कालिदास (८) वराहमिहिर
(९) वररुचि

नवग्रह औषधि

(१) अर्क (मदार) (२) पलाश (३) खदिर
(४) अपामार्ग (५) पीपल (६) औदुम्बर (गूलर)
(७) शमी (८) दूर्वा (९) कुशा

नवरस

(१) शृङ्गार (२) हास्य (३) करुण (४) रौद्र
(५) वीर (६) भयानक (७) बीभत्स (८) अद्‌भुत
(९) शान्त

नव स्थायी भाव

(१) रति (२) हास (३) शोक (४) क्रोध
(५) उत्साह (६) भय (७) जुगुप्सा (८) विस्मय
(९) निर्वेद

नव कालमान

(१) ब्राह्म (२) दैव (३) पैत्र्य (४) प्रजापत्य
(५) बार्हस्पत्य (६) सौर (७) चान्द्र (८) सावन
(९) नाक्षत्र

नवदुर्गा

(१) शैलपुत्री (२) ब्रह्मचारिणी (३) चित्रघंटा (४) कुष्माण्डा (५) स्कन्दमाता (६) कात्यायनी (७) कालरात्रि (८) महागौरी (९) सिद्धिदातृ

नवगौरी

(१) मुखनिर्मालिका (२) ज्येष्ठागौरी (३) सौभाग्यगौरी
(४) श्रृङ्गारगौरी (५) विशालाक्षी (६) ललिता
(७) भवानी (८) मंगलागौरी (९) महालक्ष्मी

९ ब्राह्मणग्रन्थ (सामवेद)

(१) ताण्ड्य (२) षड्विंश (३) सामविधान
(४) आर्षेय (५) दैवत (६) उपनिषद् ब्राह्मण
(७) संहितोपनिषद् (८) वंश ब्राह्मण (९) जैमिनीय ब्राह्मण

९ स्वर वर्ण

(१) अ (२) इ (३) उ (४) ऋ (५) ऌ
(६) ए (७) ओ (८) ऐ (९) औ

नव द्रव्य (वैशेषिक दर्शन)

(१) पृथिवी (२) जल (३) अग्नि
(४) वायु (५) आकाश (६) काल
(७) दिक् (८) आत्मा (९) मन

नव कर्म साक्षी

(१) सूर्य (२) सोम (३) यम (४) काल
(५) पृथ्वी (६) जल (७) वायु (८) अग्नि
(९) आकाश

(१०)

दश अवतार

(१) मत्स्य (२) कूर्म (३) वराह (४) नृसिंह
(५) वामन (६) परशुराम (७) राम (८) कृष्ण
(९) बुद्ध (१०) कल्कि

दश विश्वदेव

(१) वसु (२) सत्य (३) क्रतु (४) दक्ष
(५) काल (६) काम (७) भृति (८) कुरु
(९) पुरुरवा (१०) माद्रवा

दशधर्मलक्षण

(१) धृति (२) क्षमा (३) दम (४) अस्तेय
(५) शौच (६) इन्द्रियनिग्रह (७) धी (८) विद्या
(९) सत्य (१०) अक्रोध

दश महाविद्या

(१) महाकाली (२) तारा (३) षोडशी (४) भुवनेश्वरी
(५) त्रिपुरभैरवी (६) छिन्नमस्ता (७) धूमावती (८) बगलामुखी
(९) मातंगी (१० कमला

दश दिक्पाल

(१) इन्द्र (२) अग्नि (३) यम (४) निर्ऋति
(५) वायु (६) वरुण (७) कुबेर या सोम (८) ईशान
(९) ब्रह्मा (१०) अनन्त

दश लकार (काल भेद)

(१) लट् (वर्तमान) (२) लिट् (परोक्षभूत) (३) लुट्
(४) लृट (भविष्य) (५) लेट् (६) लोट्
(७) लङ् (८) लिङ् (विधि, आशी:), (९) लुङ्
(१०) लृङ्

दश महादान

(१) गो (२) भूमि (३) तिल (४) सोना
(५) घी (६) वस्त्र (७) धान्य (८) गुड़
(९) चाँदी (१०) नमक

दश दिशायें

(१) प्राची (२) आग्नेयी (३) दक्षिणा (४) नैर्ऋती
(५) पश्चिमा (६) वायवी (७) उत्तरा (८) ऐशानी
(९) ऊर्ध्वा (१०) अधरा

दश पाप

त्रिविध कायिक- (१) अदत्त ग्रहण, (२) हिंसा, (३) पर स्त्री गमन, **चतुर्विध वाङ्मय-** (४) परुष वचन, (५) पैशुन्य (क्लीवता), (६) प्रलाप, (७) अनृत (असत्य), **त्रिविध मानस-** (८) पर द्रव्य हरण, (९) अनिष्ट चिन्तन, (१०) अभिनिवेश (मोह)

दशहरा गंगा

(१) ज्येष्ठ मास (२) शुक्लपक्ष (३) दशमी तिथि (४) बुधवार
(५) हस्तनक्षत्र (६) व्यतीपात योग (७) गर करण
(८) आनन्द योग (९) कन्या राशि (१०) वृष का सूर्य

ब्रह्मा के दश पुत्र

(१) मरीचि (२) अत्रि (३) अंगिरा (४) पुलस्त्य
(५) पुलह (६) क्रतु (७) दक्ष (८) वसिष्ठ
(९) भृगु (१०) नारद (इन्हें प्रजापति भी कहा गया है)

दश देवयोनियाँ

(१) विद्याधर (२) अप्सरा (३) यक्ष (४) राक्षस
(५) गन्धर्व (६) किन्नर (७) पिशाच (८) गुह्यक
(९) सिद्ध (१०) भूत

दश आसन

(१) पद्म (२) वीर (३) भद्र (४) स्वस्तिक
(५) दण्ड (६) पर्यङ्क (७) ज्ञान (८) योग
(९) वज्र (१०) आलीढ़

दशाङ्गसुधूप

(१) कुष्ठ (६ भाग) (२) गुड़ (दुगना) (३) लाक्षा (२ गुना)
(४) पंचनख (५) हरीतकी (६) सर्जरस
(७) मांस (सुगन्धित पदार्थ) (८) शैलज (९) घन
(१०) पुर

दश प्रधान उपनिषद्

(१) ईश (२) केन (३) कठ (४) प्रश्न
(५) मुण्डक (६) माण्डूक्य (७) तैत्तिरीय (८) ऐतरेय
(९) छान्दोग्य (१०) बृहदारण्यक

रूपक (नाटक) के १० भेद

(१) नाटक (२) प्रकरण (३) भाण (४) प्रहसन
(५) डिम (६) व्यायोग (७) समवकार (८) वीथि
(९) अङ्क (१०) ईहामृग

दश पारमितायें (शील)

(१) दान (२) शील (३) नेक्षम (नेक्खम) (४) प्रज्ञा
(५) वीर्य (६) क्षान्ति (७) सत्य (८) अधिष्ठान
(९) मित्रता (१०) उपेक्षा

दशविध दीक्षा

(१) स्मार्ती (२) मानसी (३) यौगी (४) चाक्षुषी
(५) स्पार्शिकी (६) वाचिकी (७) मान्त्री (८) हौत्री
(९) शास्त्री (१०) अभिषेचिका

दश अङ्ग (धनुर्वेद)

(१) आदान (२) संधान (३) मोक्षण (४) निवर्तन
(५) स्थान (६) मुष्टि (७) प्रयोग (८) प्रायश्चित
(९) मण्डल (१०) रहस्य

१० प्रकार की कपिला गाय

(१) स्वर्ण कपिला (२) गौर पिङ्गला (३) रक्तपिङ्गाक्षी
(४) गलपिङ्गला (५) वभ्रुवर्णाभा (६) श्वेतपिङ्गला
(७) रक्तपिङ्गला (८) खुरपिङ्गला (९) पाटला
(१०) पुच्छपिङ्गला

१० अधर्म लक्षण

(१) मत्त (२) प्रमत्त (३) उन्मत (४) श्रान्त
(५) क्रुद्ध (६) बुभुक्षित (७) त्वरमाण (शीघ्री)
(८) भीरु (९) लुब्ध (१०) कामी

मनु की १० सन्तानें

(१) इक्ष्वाकु (२) नृग (३) शर्याति (४) दिष्ट
(५) धृष्ट (६) करूषक (७) नरिष्यन्त (८) पृषध्र
(९) नभग (१०) कवि

इनमें इक्ष्वाकु वंश प्रवर्तक थे।

१० कुलद्रुम (प्रधानवृक्ष)

(१) बेल (२) बरगद (३) पीपल (४) गूलर
(५) निम्ब (६) आमला (७) लसोढ़ा (८) इमली
(९) करंज (१०) कदम्ब

दश दुग्ध

(१) गाय (२) भैंस (३) भेंड (४) बकरी
(५) ऊँटनी (६) घोड़ी (७) स्त्री (८) हथिनी
(९) हरिणी (१०) गधी

(११)

एकादश रुद्र

(१) अ़जैकपाद (२) अहिर्बुध्न्य (३) विरूपाक्ष (४) पिनाक़पाणि
(५) वृषाकपि (६) कपर्दी (७) रैवत (८) हर
(९) बहुरूप (१०) त्र्यम्बक (११) रुद्र

एकादश करण (ज्योतिष)

(१) वव (२) वालव (३) कौलव (४) तैतिल
(५) गर (६) वणिज (७) विष्टि (८) शकुनि
(९) चतुष्पद (१०) नाग (११) किंस्तुघ्न

११ हाव

(१) लीला (२) विलास (३) विच्छित्ति (४) भ्रम
(५) किल किञ्चित् (६) मोहायित (७) विव्वोक (८) विहृत
(९) कुट्टमित (१०) ललित (११) हेला

(१२)

द्वादशज्योतिर्लिङ्ग

(१) श्री सोमनाथ (२) श्री मल्लिकार्जुन (३) श्री ऊँकारेश्वर
(४) श्री महाकालेश्वर (५) श्री वैद्यनाथेश्वर (६) श्री केदारेश्वर
(७) श्री भीमशंकर (८) श्री विश्वनाथ (९) श्री त्र्यम्बकेश्वर
(१०) श्री नागेश्वर (११) श्री रामेश्वर (१२) श्री घुष्मेश्वर

द्वादश आदित्य

(१) धाता (२) मित्र (३) अर्यमा (४) रुद्र
(५) वरुण (६) सूर्य (७) भग (८) विवश्वान्
(९) पूषा (१०) सविता (११) त्वष्टा (१२) विष्णु

वैदिक द्वादशमास

(१) मधु (२) माधव (३) शुक्र (४) शुचि
(५) नभः (६) नभस्य (७) इष (८) ऊर्ज
(९) सहः (१०) सहस्य (११) तपः (१२) तपस्य

लौकिक द्वादशमास

(१) चैत्र (२) वैशाख (३) ज्येष्ठ (४) आषाढ़
(५) श्रावण (६) भाद्रपद (७) आश्विन (८) कार्तिक
(९) मार्गशीर्ष (१०) पौष (११) माघ (१२) फाल्गुन

द्वादश साध्यगण

(१) मन (२) मन्ता (३) प्राण (४) नर
(५) यान (६) वीर्यवान् (७) विनिर्भय (८) नय
(९) हंस (१०) नारायण (११) वृष (१२) प्रमुञ्च

द्वादश राशियाँ

(१) मेष (२) वृष (३) मिथुन (४) कर्क
(५) सिंह (६) कन्या (७) तुला (८) वृश्चिक
(९) धनु (१०) मकर (११) कुम्भ (१२) मीन

द्वादश प्रमेय (न्यायशास्त्र)

(१) आत्मा (२) शरीर (३) इन्द्रियाँ (४) अर्थ
(५) बुद्धि (६) मन (७) प्रवृत्ति (८) दोष
(९) प्रेतभाव (१०) फल (११) दुःख (१२) अपवर्ग

द्वादश भाव (ज्योतिष)

(१) तनु (२) धन (३) सहज (४) सुख
(५) विद्या (६) शत्रु (७) जाया (८) मृत्यु
(९) धर्म(भाग्य) (१०) कर्म (११) आय (१२) व्यय

द्वादश दर्शन

आस्तिक- (१) सांख्य (२) योग (३) वैशेषिक
(४) न्याय (५) मीमांसा (६) वेदान्त

नास्तिक- (७) चार्वाक् (८) जैन (९) माध्यमिक
(१०)योगाचार(११) सौत्रांतिक (१२) वैभाषिक

(१३)

१३ (तेरह) संख्या के अधिपति

(१) वसु (२) सत्य (३) क्रतु (४) दक्ष
(५) काल (६) काम (७) भृति (८) कुरु
(९) पुरुरवा (१०) माद्रवा (११) सूर्य (१२) चन्द्र
(१३) अग्नि

त्रयोदश/त्रयोदशी की संख्या इन्हीं विश्वेदेवा से परिगणित होती है।

(१४)

चतुर्दशमनु

(१) स्वायंभुव (२) स्वारोचिष(३) औत्तमी (४) तामस
(५) रैवत (६) चाक्षुष् (७) वैवस्वत (८) अतल
(९) दक्षसावर्णि (१०) ब्रह्मसावर्णि (११) धर्मसावर्णि
(१२) रुद्रसावर्णि (१३) रौच्यदेवसावर्णि (१४) इन्द्रसावर्णि

चौदह सृष्टि

(१) ब्राह्मी सृष्टि (२) प्राजापत्य सृष्टि (३) ऐन्द्री सृष्टि
(४) दैवी सृष्टि (५) गान्धर्व सृष्टि (६) पित्र्य सृष्टि
(७) विदेह सृष्टि (८) प्रकृतिलय सृष्टि (९) मानुषी सृष्टि
(१०) पशु सृष्टि (११) पक्षी सृष्टि (१२) सरीसृप सृष्टि
(१३) कीट सृष्टि (१४) स्थावर सृष्टि

चतुर्दश रत्न

(१) लक्ष्मी (२) कौस्तुभ (३) पारिजात (४) सुरा
(५) धनवन्तरि (६) चन्द्रमा (७) कामधेनु (८) ऐरावत
(९) रम्भा (१०) सप्तमुख अश्व (११) कालकूट
(१२) विष्णुधनु (१३) शंख (१४) अमृत

चतुर्दश यम

(१) यम (२) धर्मराज (३) मृत्यु (४) अन्तक
(५) वैवस्वत (६) काल (७) सर्वभूतक्षय (८) औदुम्बर
(९) दघ्न (१०) नील (११) परमेष्ठी (१२) वृकोदर
(१३) चित्र (१४) चित्रगुप्त

१४ माहेश्वर सूत्र (पाणिनि)

(१) अइउण् (२) ऋलृक् (३) एओङ् (४) ऐऔच्
(५) हयवरट् (६) लण् (७) ञमङणनम् (८) झभञ्
(९) घढधष् (१०) जबगडदश् (११) खफछठथचटतव्
(१२) कपय् (१३) शषसर् (१४) हल्

चतुर्दश इन्द्र

(१) इन्द्र (२) विश्वभुक् (३) विपश्चित् (४) विभु
(५) प्रभु (६) शिखी (७) मनोजव (८) तेजस्वी
(९) बलिर्भाव्य (१०) अद्भुत त्रिदिव (११) सुशान्ति
(१२) सुकीर्ति (१३) ऋतधाता (१४) दिवस्पतिः

(१५)

पन्द्रह तिथियाँ

(१) प्रतिपत् (२) द्वितीया (३) तृतीया (४) चतुर्थी
(५) पंचमी (६) षष्ठी (७) सप्तमी (८) अष्टमी
(९) नवमी (१०) दशमी (११) एकादशी (१२) द्वादशी
(१३) त्रयोदशी (१४) चतुर्दशी (१५) पूर्णिमा- अमावास्या (३०)

प्रमुख पन्द्रह प्राण वाहिनी नाड़ियाँ

(१) सुषुम्णा (२) इड़ा (३) पिंगला (४) गांधारी
(५) हस्तजिह्वा (६) पूषा (७) यशस्विनी (८) शूरा
(९) कुहू (१०) सरस्वती (११) वारुणी (१२) अलम्बुषा
(१३) विश्वोदरी (१४) शंखिनी (१५) चित्रा

(१६)

षोडश चन्द्रकलायें

(१) अमृता (२) मानदा (३) पूषा (४) तुष्टि
(५) पुष्टि (६) रति (७) धृति (८) शशिनी
(९) चन्द्रिका (१०) कान्ति (११) ज्योत्स्ना (१२) श्री
(१३) प्रीति (१४) अङ्गदा (१५) पूर्णा (१६) पूर्णा अमृता

षोडशोपचार

(१) आवाहन (२) आसन (३) पाद्य (४) अर्घ्य
(५) आचमनीय (६) स्नानीय (७) वस्त्र (८) यज्ञोपवीत
(९) चन्दन/अनुलेपन (१०) पुष्प (११) धूप
(१२) दीप (१३) नैवेद्य (१४) पुष्पाञ्जलि (१५) प्रदक्षिणा
(१६) दक्षिणा/विसर्जन

षोडश श्रृंगार

(१) उबटन (२) मंजन (३) मिस्सी (४) स्नान
(५) सुवस्त्र (६) केश विन्यास (७) अंजन (८) सिन्दूर
(९) महावर (१०) बिन्दी (११) तिलनिर्माण (१४) मेंहदी
(१३) सुगन्धि (१४) आभूषण (१५) पुष्पमाला (१६) ताम्बूल

षोडश मातृकायें

(१) गौरी (२) पद्मा (३) शची (४) मेधा
(५) सावित्री (६) विजया (७) जया (८) देवसेना
(९) स्वधा (१०) स्वाहा (११) मातरः (१२) लोकमातरः
(१३) हृष्टि (१४) पुष्टि (१५) तुष्टि (१६) कुलदेवता

षोडश विकार (सांख्य)

(१) आकाश (२) वायु (३) अग्नि (४) जल
(५) पृथ्वी (६) श्रोत्र (७) त्वचा (८) नेत्र
(९) रसना (१०) घ्राण (११) वाणी (१२) हस्त
(१३) पाद (१४) उपस्थ (१५) गुदा (१६) मन

सोलह महादान धर्मशास्त्र

(१) तुलापुरुष दान (२) हिरण्यगर्भदान (३) ब्रह्माण्डदान
(४) कल्पवृक्ष दान (५) गोसहस्रदान (६) स्वर्णगोदान
(७) स्वर्ण अश्वदान (८)स्वर्णरथघोड़ेसहित (९) स्वर्णहाथीदान
(१०) पाँचस्वर्णहलदान (११) भूदान (१२) विश्वचक्रदान
(१३) कल्पलतादान (१४) सप्तसागरदान (१५) रत्नधेनु दान
(१६) महाभूतघटदान

न्याय (तर्क) शास्त्र के षोडश पदार्थ

(१) प्रमाण (२) प्रमेय (३) संशय (४) प्रयोजन
(५) दृष्टान्त (६) सिद्धान्त (७) अवयव (८) तर्क
(९) निर्णय (१०) वाद (११) जल्प (१२) वितण्डा
(१३)हेत्वाभास (१४) छल (१५) जाति (१६) निग्रहस्थान

१६ यज्ञस्तम्भ

(१) शुभद (२) विजय (३) कृष्ण (४) श्रीमान्
(५) मंगल (६) गुरु (७) जय (८) धनद
(९) कल्याणी (१०) शुभ (११) शान्त (१२) मनोहर
(१३) ऋद्धि (१४) सिद्धि (१५) विचित्र (१६) दिव्यरूप

१६ मूलिनी (औषधीय पदार्थ)

(१) हरितदन्ती (२) हैमवती (३) श्यामा
(४) त्रिवृत् (५) अधोगुडा (६) सप्तला
(७) श्वेतनामा (८) प्रत्यक्श्रेणी (९) गवाक्षी
(१०) ज्योतिष्मती (११) बिम्बी (१२) शणपुष्पी
(१३) विषाणिका (१४) अजगन्धा (१५) द्रवन्ती
(१६) क्षीरिणी

षोडश महाजनपद

(१) अंग (२) वंग (३) काशी (४) कोशल
(५) वृज्जि (६) मल्ल (७) चेदि (८) वत्स
(९) कुरु (१०) पाञ्चाल (११) मत्स्य (१२) शूरसेन
(१३) अश्वक (१४) अवन्ति (१५) गान्धार (१६) काम्बोज

(१८)

अष्टादश विद्यायें

(१) ऋग्वेद (२) यजुर्वेद (३) सामवेद (४) अथर्ववेद
(५) व्याकरण (६) ज्योतिष (७) निरूक्त (८) कल्प
(९) शिक्षा (१०) छन्द (११) मीमांसा (१२) न्याय
(१३) धर्मशास्त्र (१४) पुराण (१५) आयुर्वेद (१६) धनुर्वेद
(१७) गन्धर्ववेद (१८) अर्थशास्त्र

अष्टादश स्मृतियाँ

(१) मनु (२) अत्रि (३) विष्णु (४) हारीत
(५) याज्ञवल्क्य (६) उशना (७) अंगिरा (८) यम
(९) आपस्तम्ब (१०) संवर्त (११) कात्यायन (१२) बृहस्पति
(१३) पाराशर (१४) शंख (१५) लिखित (१६) दक्ष
(१७) गौतम (१८) शातातप

अष्टादश पुराण

(१) विष्णु (२) पद्म (३) ब्रह्म (४) शिव
(५) भागवत (६) नारद (७) मार्कण्डेय (८) अग्नि
(९) ब्रह्मवैवर्त (१०) लिंग (११) वराह (१२) स्कन्द
(१३) वामन (१४) कूर्म (१५) मत्स्य (१६) गरुड़
(१७) ब्रह्माण्ड (१८) भविष्य

१८ तिङ् (क्रियात्मक काल)

(१) तिप् (२) तस् (३) झि (४) सिप्
(५) थस् (६) थ (७) मिप् (८) वस्
(९) मस् (१०) त (११) आताम् (१२) झ
(१३) थास् (१४) आथाम् (१५) ध्वम् (१६) इट्
(१७) वहि (१८) महिङ्

१८ ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तक

(१) सूर्य (२) पितामह (३) व्यास (४) वसिष्ठ
(५) अत्रि (६) पराशर (७) कश्यप (८) नारद
(९) गर्ग (१०) मरीचि (११) मनु (१२) अङ्गिरा
(१३) लोमश (१४) पौलिश (१५) च्यवन (१६) यवन
(१७) भृगु (१८) शौनक

१८ वास्तुशास्त्र प्रवर्तक

(१) भृगु (२) अत्रि (३) वसिष्ठ (४) विश्वकर्मा
(५) यम (६) नारद (७) नग्नजित् (८) विशालाक्ष
(९) पुरन्दर (१०) ब्रह्मा (११) कुमार (कार्तिकेय)
(१२) नन्दीश (१३) शौनक (१४) गर्ग (१५) वासुदेव
(१६) अनिरुद्ध (१७) शुक्र (१८) बृहस्पति

१८ पर्व (महाभारत)

(१) आदिपर्व (२) सभापर्व (३) वनपर्व (४) विराट्पर्व
(५) उद्योगपर्व (६) भीष्मपर्व (७) द्रोणपर्व (८) कर्णपर्व
(९) शल्यपर्व (१०) सौप्तिकपर्व
(११) स्त्रीपर्व (१२) शान्तिपर्व
(१३) अनुशासन पर्व (१४) आश्वमेधिक पर्व
(१५) आश्रमवासिकपर्व (१६) मौसल पर्व
(१७) महाप्रस्थानिक पर्व (१८) स्वर्गारोहण पर्व

(२०)

२० कफ व्याधि

(१) तृप्ति (२) तन्द्रा (३) निद्राधिक्य
(४) स्तैमित्य (५) गुरुगात्रता (६) आलस्य
(७) मुखमाधुर्य (८) मुखस्राव (९) श्लेष्मोद्‌गिरण
(१०) मलस्याधिक्य (११) बलासक (१२) अपचन
(१३) हृदयोपलेप (१४) कण्ठोपलेप (१५) धमनीप्रतिचय
(१६) गलगण्ड (१७) अतिस्थौल्य (१८) शीताग्निता
(१९) उदर्द (२०) श्वेतावगासता

२१ प्रजापति

(१) ब्रह्मा (२) स्थाणु (३) मनु (४) दक्ष
(५) भृगु (६) धर्म (७) यम (८) मरीचि
(९) अङ्गिरा (१०) अत्रि (११) पुलस्त्य (१२) पुलह
(१३) क्रतु (१४) वसिष्ठ (१५) परमेष्ठी (१६) विवष्वान्
(१७) शुभ (१८) कर्दम (१९) क्रोध (२०) अर्वाक्
(२१) कृत

(२४)

चौबीस तीर्थङ्कर

(१) ऋषभनाथ (२) अजितनाथ (३) संभवनाथ
(४) अभिनन्दननाथ (५) सुमतिनाथ (६) पद्मप्रभु
(७) सुपार्श्वनाथ (८) चन्द्रप्रभु (९) पुष्पदन्तनाथ
(१०) शीतलनाथ (११) श्रेयांसनाथ (१२) वासुपूज्य
(१३) विमलनाथ (१४) अनंतनाथ (१५) धर्मनाथ
(१६) शान्तिनाथ (१७) कुन्थुनाथ (१८) अरहनाथ
(१९) मल्लिनाथ (२०) मुनिसुव्रतनाथ (२१) नमिनाथ
(२२) नेमिनाथ (२३) पार्श्वनाथ (२४) महावीर स्वामी

चौबीस गुण

(१) रूप	(२) रस	(३) गन्ध
(४) स्पर्श	(५) संख्या	(६) परिमाण
(७) पृथक्त्व	(८) संयोग	(९) विभाग
(१०) परत्व	(११) अपरत्व	(१२) गुरुत्व
(१३) द्रवत्व	(१४) स्नेह	(१५) शब्द
(१६) बुद्धि	(१७) सुख	(१८) दुःख
(१९) इच्छा	(२०) द्वेष	(२१) प्रयत्न
(२२) धर्म	(२३) अधर्म	(२४) संस्कार

चौबीस विष्णु

(१) केशव	(२) नारायण	(३) माधव
(४) गोविन्द	(५) विष्णु	(६) मधुसूदन
(७) त्रिविक्रम	(८) वामन	(९) श्रीधर
(१०) हृषीकेश	(११) पद्मनाभ	(१२) दामोदर
(१३) संकर्षण	(१४) वासुदेव	(१५) प्रद्युम्न
(१६) अनिरुद्ध	(१७) पुरुषोत्तम	(१८) अधोक्षज
(१९) नृसिंह	(२०) अच्युत	(२१) जनार्दन
(२२) उपेन्द्र	(२३) हरि	(२४) कृष्ण

(२७)

सत्ताइस नक्षत्र

(१) अश्विनी	(२) भरणी	(३) कृत्तिका	(४) रोहिणी
(५) मृगशीर्ष	(६) आर्द्रा	(७) पुनर्वसु	(८) पुष्य
(९) श्लेषा	(१०) मघा	(११) पूर्वाफाल्गुनी	
(१२) उत्तराफाल्गुनी	(१३) हस्त	(१४) चित्रा	(१५) स्वाती
(१६) विशाखा	(१७) अनुराधा	(१८) ज्येष्ठा	(१९) मूल
(२०) पूर्वाषाढ़ा	(२१) उत्तराषाढ़ा	(२२) श्रवण	(२३) धनिष्ठा
(२४) शतभिषा	(२५) पूर्वाभाद्रपदा	(२६) उत्तराभाद्रपदा	
(२७) रेवती			

सत्ताइस योग (ज्योतिष)

(१) विष्कम्भ (२) प्रीति (३) आयुष्मान् (४) सौभाग्य
(५) शोभन (६) अतिगण्ड (७) सुकर्मा (८) धृति
(९) शूल (१०) गण्ड (११) वृद्धि (१२) ध्रुव
(१३) व्याघात (१४) हर्षण (१५) वज्र (१६) सिद्धि
(१७) व्यतीपात (१८) वरीयान् (१९) परिघ (२०) शिव
(२१) सिद्ध (२२) साध्य (२३) शुभ (२४) शुक्ल
(२५) ब्रह्म (२६) ऐन्द्र (२७) वैधृति

२७ अग्नियाँ (सप्तविंशतिः पावकाः)

(१) अङ्गिरा (२) दक्षिणग्नि (३) गार्हपत्याग्नि
(४) आहवनीयाग्नि (५) निर्मन्थ्य (६) वैद्युत
(७) शूर (८) संवर्त (९) लौकिक
(१०) जठराग्नि (११) विषग (१२) क्रव्यात्
(१३) क्षेमवान् (१४) वैष्णव (१५) दस्युमान्
(१६) बलद (१७) शान्त (१८) पुष्ट
(१९) विभावसु (२०) ज्योतिष्मान् (२१) भरत
(२२) भद्र (२३) स्विष्टकृत् (२४) वसुमान्
(२५) क्रतु (२६) सोम (२७) पितृमान्।

(३२)

३२ पुरुषलक्षण

(१) पञ्चसूक्ष्म (लघु)- त्वचा, केश, अंगुलि, अंगुलिपर्व, दन्त
(२) पञ्चदीर्घ- भुजा, नेत्र, हनु, जानु, नासिका,
(३) सप्त रक्त- हथेली, आँखें, तालु, जिह्वा, अधर, ओष्ठ, नख
(४) षड् उन्नत- वक्ष, उदर, ललाट, स्कन्ध, हस्त, मुख
(५) त्रिगम्भीर- स्वर, सत्त्व (अन्तःकरण), नाभी
(६) त्रिह्रस्व- ग्रीवा, जंघा, मेहन (लिंग)
(७) त्रि पृथुल (भारी)- ललाट, कटि, वक्ष

(३३)

अधिमास के तैंतीस देवता

(१) विष्णु (२) जिष्णु (३) महाविष्णु (४) हरि
(५) कृष्ण (६) अधोक्षज (७) केशव (८) माधव
(९) राम (१०) अच्युत (११) पुरुषोत्तम (१२) गोविन्द
(१३) वामन (१४) श्रीश (१५) श्रीकृष्ण (१६) विश्वसाक्षी
(१७) नारायण (१८) मधुरिपु (१९) अनिरुद्ध (२०) त्रिविक्रम
(२१) वासुदेव (२२) जगद्योनि (२३) अनंत (२४) शेषशायिन्
(२५) संकर्षण (२६) प्रद्युम्न (२७) दैत्यारि (२८) विश्वतोमुख
(२९) जनार्दन (३०) धरावास (३१) दामोदर (३२) मघार्दन
(३३) श्रीपति

३३ संचारी भाव

(१) निर्वेद (२) आवेग (३) दैन्य (४) श्रम
(५) मद (६) जड़ता (७) उग्रता (८) मोह
(९) निबोध (१०) स्वप्न (११) अपस्मार (१२) गर्व
(१३) मरण (१४) आलस्य (१५) अमर्ष (१६) निद्रा
(१७) अवहित्था (१८) औत्सुक्य (१९) उन्माद (२०) शंका
(२१) स्मृति (२२) मति (२३) व्याधि (२४) त्रास
(२५) क्रीडा (२६) हर्ष (२७) असूया (२८) विषाद
(२९) धृति (३०) चपलता (३१) ग्लानि (३२) चिन्ता
(३३) वितर्क

(३६)

३६ तुषित

स्वारोचिष मन्वन्तर में-

(१) प्राण (२) अपान (३) समान (४) उदान
(५) व्यान (६) चक्षुः (७) श्रोत (८) रसना
(९) घ्राण (१०) स्पर्श (११) बुद्धि (१२) मन

वैवस्वत एवं चाक्षुष मन्वन्तर में-

(१३) विष्णु (१४) शक्र (१५) अर्यमा या यम
(१६) धाता (१७) त्वष्टा (१८) पूषा (१९) विवस्वान्
(२०) सविता (२१) मित्र (२२) वरुण
(२३) अंश (अंशुमान्) (२४) भग

स्वायम्भुव मन्वन्तर में-

(२५) तोष (२६) प्रतोष (२७) संतोष (२८) भद्र
(२९) शान्ति (३०) इडष्पति (३१) इध्म (३२) कवि
(३३) विभु (३४) स्वाहा (३५) सुदेव (३६) रोचन

(३७)

३७ पूजा जल

(१) कुशोदक (२) दूर्वोदक (३) गन्धोदक
(४) सर्वौषधि उदक (५) फलोदक (६) वृषशृङ्गोदक
(७) धान्योदक (८) यवोदक (९) तिलोदक
(१०) नदी जल (११) तीर्थोदक (१२) गजदन्तमृत्तोय
(१३) परशूत्कृष्टमृदुदक (१४) सुवर्णोदक (१५) शैय्योदक
(१६) शुद्धोदक (१७) बाणगंगा जल (१८) हिमजल
(१९) रत्न जल (२०) पञ्चरत्न जल (२१) नवरत्न जल
(२२) पंचगव्य जल (जल, दूध, दही, घृत, गोमूत्र, गोमय)
(२३) तड़ाग जल (२४) संगम जल (२५) आमलक जल
(२६) हरिद्रा जल (२७) विल्वपत्र जल (२८) मेघजल
(२९) नागवल्ली (ताम्बूल पत्र) जल (३०) रुद्राक्षजल
(३१) नारिकेलोदक (३२) सहस्त्रछिद्रकलशोदक
(३३) केवड़ा जल (३४) गुलाब जल (३५) समुद्र जल
(३६) कमल(पद्म)जल (३७) सप्तनदी जल (गंगा, यमुना, कावेरी, नर्मदा, वेणी, तुङ्गभद्रा, सरस्वती)

(३८)

३८ प्रधान अप्सरायें

(१) उर्वशी	(२) मेनका	(३) रम्भा
(४) चन्द्रलेखा	(५) तिलोत्तमा	(६) वपुष्मती
(७) कान्तिमती	(८) लीलावती	(९) उत्पलावती
(१०) अलम्बुषा	(११) गुणवती	(१२) स्थूलकेशी
(१३) कलावती	(१४) कलानिधि	(१५) गुणनिधि
(१६) कर्पूरतिलका	(१७) उर्वरा	(१८) अनंगलतिका
(१९) मदनमोहिनी	(२०) चकोराक्षी	(२१) चन्द्रकला
(२२) मुनिमनोहरा	(२३) ग्रावद्रावा	(२४) तपोद्वेष्टी
(२५) चारुनासा	(२६) सुकर्णिका	(२७) वारसंजीवनी
(२८) सुश्री	(२९) क्रतुशुल्का	(३०) शुभानना
(३१) तप:शुल्का	(३२) तीर्थशुल्का	(३३) दानशुल्का
(३४) हिमावती	(३५) पंचाश्वमेधिका	(३६) राजसूयार्थिनी
(३७)अष्टाग्निहोमिका	(३८) वाजपेयशतोद्भवा	

(४०)

४० पित्त व्याधि

(१) ओष	(२) प्लोष	(३) दाह
(४) दवधु	(५) धूमक	(६) अम्लक
(७) विदाह	(८) अन्तरदाह	(९) अंशदाह
(१०) उष्माधिक्य	(११) अतिश्वेद	(१२) अङ्गरान्ध
(१३) अङ्गावदरण	(१४) शोणितक्लेद	(१५) मांस क्लेद
(१६) त्वक्दाह	(१७) त्वगवदरण	(१८) चरमावदरण
(१९) रक्तकोष्ठ	(२०) रक्तविस्फोट	(२१) रक्तपित्त
(२२) रक्तमण्डल	(२३) हरितत्व	(२४) हारिद्रवत्व

(२५) नीलिका (२६) कथ्या (२७) कामला
(२८) तिक्तास्यता (२९) लोहितगन्धास्यता (३०) पुतिमुखता
(३१) तृष्णाधिक्य (३२) अतृप्ति (३३) आस्यविपाक
(३४) गलपाक (३५) अक्षिपाक (३६) गुदपाक
(३७) मूढ़पाक और जीवादान (३८) तमः प्रवेश
(३९) नेत्र शूल (४०) अमलका हरा वर्ण या पीला वर्ण।

(४९)

उनचास मरुत्

(१) सत्त्वज्योति (२) आदित्य (३) सत्यज्योति
(४) तिर्यग् ज्योति (५) सज्योति (६) ज्योतिष्मान्
(७) हरित (८) ऋतजित् (९) सत्यजित्
(१०) सुषेण (११) सेनजित् (१२) सत्यमित्र
(१३) अभिमित्र (१४) हरिमित्र (१५) कृत
(१६) सत्य (१७) ध्रुव (१८) धर्ता
(१९) विधर्ता (२०) विधारय (२१) ध्वान्त
(२२) धुनि (२३) उग्र (२४) भीम
(२५) अभियु (२६) साक्षिप (२७) ईदृक्
(२८) अन्यादृक् (२९) यादृक् (३०) प्रतिकृत्
(३१) ऋक् (३२) संमिति (३३) संरम्भ
(३४) ईदृक्ष् (३५) पुरुष (३६) अन्यादृक्ष
(३७) चेतस (३८) समिता (३९) समिदृक्ष
(४०) प्रतिदृक्ष (४१) मरुति (४२) सरत
(४३) देव (४४) दिश (४५) युजः
(४६) अनुदृक् (४७) साम (४८) मानुष
(४९) विश्

५० (पञ्चाशत्) क्षेत्रपाल

(१) क्षेत्रपाल (२) अजर (३) व्यापक (४) इन्द्रचौर
(५) इन्द्रमूर्ति (६) कुष्माण्ड (७) वरुण (८) बटुक
(९) विमुक्त (१०) लिप्तक (११) लीलोक (१२) एकदंष्ट्र
(१३) ऐरावत (१४) ओषधिजन (१५) बन्धन (१६) दिव्यकाय
(१७) कम्बल (१८) भीषण (१९) गवय (२०) घण्टा
(२१) व्याल (२२) अणु (२३) चन्द्रवारुण (२४) घटाटोप
(२५) जटिल (२६) क्रतु (२७) घण्टेश्वर (२८) विकट
(२९) मणिमान: (३०) गणबन्धु (३१) डामर (३२) ढुंढ़िकर्ण
(३३) स्थविर (३४) दन्तुर (३५) नागकर्ण (३६) धनद
(३७) महाबल (३८) फेत्कार (३९) चीत्कार (४०) सिंह
(४१) मृग (४२) यक्ष (४३) मेघवाहन (४४) तीक्ष्णोष्ठ
(४५) अनल (४६) शुक्लतुण्ड (४७) सुधालाप (४८) वर्वरक
(४९) सवन (५०) पावन

(५१)

५१ शक्तिपीठ

(१) हिंगलाज (२) शर्करार (३) सुगन्धा
(४) काश्मीर (५) ज्वालामुखी (६) जालन्धर
(७) वैद्यनाथ (८) नेपाल (९) मानसरोवर
(१०) विराज(उड़ीसा) (११) गण्डकी (१२) बहुला
(१३) उज्जयिनी (१४) त्रिपुरा (१५) चट्टग्राम
(१६) त्रिस्रोत (१७) कामाख्या (१८) प्रयाग
(१९) जयन्ती (२०) युगान्धा (२१) कालीपीठ
(२२) किरीट (२३) वाराणसी (२४) कन्याश्रम

(२५) कुरुक्षेत्र	(२६) मणिबन्ध	(२७) श्रीशैल
(२८) काञ्ची	(२९) कालमाधव	(३०) शोणदेश
(३१) रामगिरि	(३२) वृन्दावन	(३३) शुचि
(३४) पञ्चसागर	(३५) करतोयातट	(३६) श्रीपर्वत
(३७) विभाष	(३८) प्रभास	(३९) भैरवपर्वत
(४०) जन्मस्थल	(४१) सर्वशैल	(४२) गोदावरीतट
(४३) रत्नावली	(४४) मिथिला	(४५) नलहाटी
(४६) कर्णाट	(४७) वक्रेश्वर	(४८) यशोर
(४९) अट्टहास	(५०) नन्दीपुर	(५१) लङ्का

(६०)

६० संवत्सर

(१) प्रभव	(२) विभव	(३) शुक्ल	(४) प्रमोद
(५) प्रजापति	(६) अंगिरा	(७) श्रीमुख	(८) भव
(९) युवा	(१०) धाता	(११) ईश्वर	(१२) बहुधान्य
(१३) प्रमाथी	(१४) विक्रम	(१५) वृषभ	(१६) चित्रभानु
(१७) सुभानु	(१८) तारण	(१९) पार्थिव	(२०) व्यय
(२१) सर्वजित्	(२२) सर्वधारी	(२३) विरोधी	(२४) विकृत
(२५) खर	(२६) नन्दन	(२७) विजय	(२८) जय
(२९) मन्मथ	(३०) दुर्मुख	(३१) हेमलम्ब	(३२) विलम्ब
(३३) विकारी	(३४) शर्वरी	(३५) प्लव	(३६) शुभकृत्
(३७) शोभन	(३८) क्रोधी	(३९) विश्वावसु	(४०) पराभव
(४१) प्लवंग	(४२) कीलक	(४३) सौम्य	(४४) साधारण
(४५) विरोधकृत्	(४६) परिधावी	(४७) प्रमादी	(४८) आनन्द
(४९) राक्षस	(५०) नल	(५१) पिंगल	(५२) काल
(५३) सिद्धार्थ	(५४) रौद्र	(५५) दुर्मति	(५६) दुंदुभी
(५७) रुधिरोद्गारी	(५८) रक्ताक्ष	(५९) क्रोधन	(६०) क्षय

६४ योगिनी (तन्त्रोक्त)

(१) अक्षोभ्या	(२) रुक्षकर्णी	(३) राक्षसी	(४) क्षपणा
(५) क्षमा	(६) पिंगाक्षी	(७) अक्षया	(८) क्षेमा
(९) इला	(१०) नीलालया	(११) लोला	(१२) रक्ता

(१३) बलाकेशी	(१४) लालसा	(१५) विमला
(१६) दुर्गा (हूताशा)	(१७) विशालाक्षी	(१८) ह्रींकारी
(१९) वड्वामुखी	(२०) महाक्रूरा	(२१) क्रोधना
(२२) भयकारी	(२३) महानना	(२४) सर्वज्ञा
(२५) तरला	(२६) तारा	(२७) ऋग्वेदा
(२८) हयानना	(२९) सारा	(३०) रुद्रसंग्राही
(३१) शम्बरा	(३२) तालजंघिका	(३३) रक्ताक्षी
(३४) सुप्रसिद्धा	(३५) विद्युज्जिह्वा	(३६) करंकिणी
(३७) मेघनादा	(३८) प्रचण्डा	(३९) उग्रा
(४०) कालकर्णी	(४१) वरप्रदा	(४२) चण्डा
(४३) प्रपंचा	(४४) प्रलयान्तिका	(४५) शिशुवक्रा
(४६) पिशाची	(४७) पिशिता	(४८) शवलोलुपा
(४९) धमनी	(५०) तपनी	(५१) रागिनी
(५२) विकृतानना	(५३) वायुवेगा	(५४) बृहत्कुक्षी
(५५) विकृता	(५६) विश्वरूपा	(५७) यमजिह्वा
(५८) जयन्ती	(५९) दुर्जया	(६०) जायन्तिका
(६१) विडाली	(६२) रेवती	(६३) पूतना
(६४) विजयन्तिका		

६४ कलायें

(१) गीत-वाद्य-नृत्य
(२) लिपि-मुद्रा-धनुर्वेद ज्ञान
(३) तैरना
(४) हस्ति अश्व आरोहण
(५) रथचर्या
(६) नौकायन
(७) शब्दवेधित्व
(८) द्यूत
(९) रूपकर्म(चित्रमूर्तिवास्तुनिर्माण)
(१०) आख्यान
(११) हास्य
(१२) नाट्य
(१३) व्यङ्ग्य
(१४) माला गुम्फन
(१५) संवाहन
(१६) वस्त्रराग
(१७) इन्द्रजाल
(१८) स्वप्न
(१९) पक्षीस्वरज्ञान
(२०) लक्षण विद्या
(२१) क्रियाकल्प(काव्यअलंकार)
(२२) वेश्या सम्बन्धी ज्ञान
(२३) अर्थविद्या
(२४) शिष्ट आचार व्यवहार
(२५) जतुयन्त्र
(२६) मधु उच्छिष्ट विद्या
(२७) सूचीकर्म (सूई-धागा)
(२८) गन्धयुक्तिः(सुगन्ध बनाना)
(२९) पुष्प शय्या
(३०) दाँत-कपड़ा रंगने की कला
(३१) शय्या रचना
(३२) जलतरंगवाद्य
(३३) हस्तलाघव
(३४) पाकशास्त्रज्ञान
(३५) शर्बत, आसव निर्माण ज्ञान
(३६) सूत्रक्रीड़ा (धागे से आकृति बनाना)
(३७) काव्य समस्यापूर्ति
(३८) तक्षक (शिल्प) कर्म
(३९) वास्तुविद्या
(४०) रत्नसुवर्णादि परीक्षा
(४१) धातुवाद
(४२) वृक्षायुर्वेद ज्ञान
(४३) पशु (तित्तर, मेष, मुर्गा) युद्ध विद्या
(४४) शुक-सारिका को पढ़ाना
(४५) केश मर्दन कौशल
(४६) अक्षर मुष्टिका कथन
(४७) देशभाषा विज्ञान
(४८) यन्त्रमातृका
(४९) मानसी कला
(५०) काचपात्र निर्माण

(५१) खेचरी कला

(५२) चौर कर्म

(५३) अदृश्य करण

(५४) वाक्सिद्धि

(५५) कामशास्त्र

(५६) आखेट

(५७) अञ्जन

(५८) मन्त्रौषधिज्ञान

(५९) षट्कर्म

(६०) मल्लविद्या

(६१) वञ्चना

(६२) खनिजविद्या

(६३) वाणिज्य

(६४) कृषिकर्म

वस्तुत: कलाओं की संख्या ५३८ है जो ६४ संक्षिप्त रूप से दी गयी हैं।

६४ वर्णाक्षर (वैदिक)

(१) अ इ उ ऋ ऌ × ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत	= १५
(२) ए ऐ ओ औ × दीर्घ, प्लुत	= ८
(३) अं अ:	= २
(४) कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग	= २५
(५) य र ल व श ष स ह	= ८
(६) क्ष त्र ज्ञ	= ३
(७) विसर्ग (:), ॡ अर्धचन्द्र (ँ)	= ३
कुलयोग	= ६४

(८०)

८० वातव्याधि

(१) नखभेद (२) व्यवाई (३) पादशूल

(४) पाद भ्रंश (५) पाद सुप्तता (६) पाद खुड्डुता

(७) गुल्मग्रह (८) पिण्डिकोद्वेष्टन (९) गृध्रसी

(१०) जानुभेद (११) जानुविश्लेष (१२), उरुस्तम्भ

(१३) उरुसाद (१४) पाङ्गुल्य (१५) गुदभ्रंश

(१६) गुदार्ति (१७) वृषणोत्क्षेप (१८) शेफस्तम्भ

(१९) वक्षणान (२०) श्रोणिभेद (२१) विड्भेद

(२२) उदावर्त (२३) खञ्जता (२४) कुब्जता
(२५) वामनत्व (२६) तृक्ग्रह (२७) पुष्टग्रह
(२८) पार्श्वावमर्द (२९) उदरावेष्ट (३०) हृन्मोह
(३१) हृदद्रव (३२) वक्षोद्घर्ष (३३) वक्षोपरोध
(३४) वक्षस्तोद (३५) वाङूशोष (३६) ग्रावास्तम्भ
(३७) मन्यास्तम्भ (३८) कण्ठोध्वंस (३९) हनुभेद
(४०) ओष्ठभेद (४१) अक्षिभेद (४२) दन्तभेद
(४३) दन्तशैथिल्य (४४) मूकत्व (४५) वाक्संग
(४६) काषायस्यता (४७) मुख शोष (४८) अरसज्ञता
(४९) घ्राणनाश (५०) कर्णमूल (५१) अशब्दस्रवण
(५२) उच्चैः‌श्रुति (५३) बहरापन (५४) वर्त्मस्तम्भ
(५५) वर्त्मसंकोच (५६) तिमिर (५७) नेत्रशूल
(५८) अक्षिब्युदास (५९) भ्रूव्युदास (६०) शंखभेद
(६१) ललाटभेद (६२) शिरःशूल (६३) केशभूमिस्फुटन
(६४) अर्दित (६५) एकाङ्गरोग (६६) सर्वाङ्गरोग
(६७) आक्षेपक (६८) दण्डक (६९) तम
(७०) भ्रम (७१) वैपथु (७२) जम्भाई
(७३) हिचकी (७४) विषाद (७५) अतिप्रलाप
(७६) रुक्षता (७७) परुषता (७८) श्यावशरीर
(७९) लाल शरीर (८०) अस्वप्न अनवस्थित।

(१००)

धृतराष्ट्र के १०० पुत्र

(१) दुर्योधन (२) युयुत्सु (३) दुःशासन
(४) दुःसह (५) दुःशल (६) दुर्मुख
(७) अपर (८) विविंशति (९) विकर्ण
(१०) जलसंध (११) सुलोचन (१२) विंद
(१३) अनुविंद (१४) दुर्धर्ष (१५) सुबाहु
(१६) दुष्प्रधर्षण (१७) दुर्मर्षण (१८) दुर्मख
(१९) दुष्कर्ण (२०) कर्ण (२१) चित्र

(२२) उपचित्र (२३) चित्राक्ष (२४) चारुचित्रांगद
(२५) दुर्मद (२६) दुष्प्रधर्ष (२७) विवित्सु
(२८) विकट (२९) सम (३०) ऊर्णनाभ
(३१) सुनाभ (३२) नंद (३३) अपनंदक
(३४) सेनापति (३५) सुषेण (३६) कुंडोदर
(३७) महोदर (३८) चित्रबाहु (३९) चित्रवर्मन्
(४०) सुवर्मन् (४१) दुर्विरोचन (४२) सुकुण्डल
(४३) महाबाहु (४४) चित्रचाप (४५) सकुण्डल
(४६) भीमवेग (४७) भीमबल (४८) बालकिन्
(४९) बलवर्धन (५०) उग्रायुध (५१) भीमशर
(५२) कनकायु (५३) दृढ़ायुध (५४) दृढ़वर्मन्
(५५) दृढ़क्षत्र (५६) सोमकीर्ति (५७) अनूदर
(५८) जरासंध (५९) दृढ़संध (६०) सत्यसंध
(६१) सहस्रवाक् (६२) उग्रश्रवस् (६३) उग्रसेन
(६४) क्षेममूर्ति (६५) अपराजित (६६) पंडितक
(६७) दुराधर (६८) क्रथन (६९) दृढ़हस्त
(७०) सुहस्त (७१) वातवेग (७२) सुर्वचस्
(७३) आदित्यकेतु (७४) वह्वाशी (७५) नागदन्त
(७६) अनुयायिन् (७७) कवचिन् (७८) निषंगिन्
(७९) दंडिन्पाशी (८०) दण्डधार (८१) धनुर्ग्रह
(८२) उग्र (८३) भीमरथ (८४) दृढ़रथ
(८५) वीरवाहु (८६) अलोलुप (८७) अभय
(८८) रौद्रकर्मन् (८९) वीरजस् (९०) अनाधृष्य
(९१) कुंडभेदिन् (९२) विराविन् (९३) दीर्घलोचन
(९४) दीर्घबाहु (९५) विशालाक्ष (९६) व्यूढोरु
(९७) प्रमथ (९८) कुंडाशी (९९) चित्रक
(१००) कनकध्वज

कन्या का नाम दुःशला था। महाभारत आदिपर्व ६७ अध्याय ९३ से १०५ श्लोक। पाठ भेद भी हैं।

हिन्दी के सौ अङ्क

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २६, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३६, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४६, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७६, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८६, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, १००

इन सौ अंकों में अंक नौ के लिखने के तीन भेद मिलते हैं। ये हैं- ६, [illegible] और ९। इसमें ९ अधोगामी है जो बहुत बाद में प्रचलन में आया है। अँगेजी के 7 ओर 9 अधोगामी होने के कारण यन्त्र में लिखे जाने पर अदृश्य फल नहीं देते। अतः हिन्दी में भी [illegible] और ६ ही लिखना चाहिए।

शून्य

आकाश या खम्

अनन्त

ईश्वर या ब्रह्माण्ड

सूर्यवंश

(५० पीढ़ियों का वर्णन)

(१) **सूर्य** भगवान्

(२) **मनु** महाराज

(३) **इक्ष्वाकु** (वंश प्रवर्तक)
(इनके अतिरिक्त नव भाई और थे)

(४) **विकुक्षि** एवं निमि
(१०० पुत्रों में अत्यन्त प्रसिद्ध दो पुत्र)

(५) **ककुत्स्थ** (वंशप्रवर्तक एवं इन्द्रसहायक)
(वृषभ ककुद (डील) पर. चढ़ कर युद्ध करने के कारण ककुत्स्थ नाम पड़ा)

अज्ञात अनेक पीढ़ियों बाद

(६) महाराज **सगर**
(इनकी दो पत्नियाँ थीं। एक से साठ हजार पुत्र हुए जिन्हें महर्षि कपिल ने जला दिया। दूसरी पत्नी से वंश चला)

(७) **असमंजस**

(८) **अंशुमान्** (अत्युग्र तपस्वी)

(९) **दिलीप** (एक नाम खट्वाङ्ग)

(१०) **भगीरथ** (माँ गंगा को पृथ्वी पर लाने वाले)

(११) **श्रुत**

(१२) **नाभाग**

(१३) **अम्बरीष**

(१४) **सिन्धुद्वीप**

(१५) **अयुताजित्**

(१६) **ऋतपर्ण** (राजा नल के मित्र थे)

(१७) **आर्तुपर्णि**

(१८) **सुदास** (इन्द्र के मित्र थे)

(१९) **सौदास**

(२०) **सर्वकर्मा**

(२१) **अनरण्य**

(२२) **निघ्न**

(२३) **अनमित्र** (इनके भाई रघु प्रसिद्ध थे)

(२४) **दुलिदुह**

(२५) **दिलीप** (भगवान् राम के चतुर्थपूर्व पुरुष)

(२६) **रघु** (वंश प्रवर्तक अन्तिम पुरुष)

(२७) **अज**

(२८) **दशरथ**

(२९) **राम**

(३०) **कुश** (इनके भाई लव थे)

(३१) **अतिथि**

(३२) **निषध**

(३३) **नल**

(३४) नभ

(३५) पुण्डरीक

(३६) क्षेमधन्वा

(३७) देवानीक

(३८) अहीनगु

(३९) सुधन्वा

(४०) अनल

(४१) उक्थ

(४२) वज्रनाभ

(४३) शंख (व्युषिताश्व नाम भी था)

(४४) पुष्प

(४५) अर्थसिद्धि

(४६) सुदर्शन

(४७) अग्निवर्ण

(४८) शीघ्र

(४९) मरु

(५०) बृहद्बल

यहीं तक सूर्यवंश के राजाओं की नामावली प्राप्त होती है। जो राजा नहीं हुए उनके वंशधर आज भी सूर्यवंशी भारतभूमि पर विद्यमान हैं। सूर्यवंश की राजवंशावली इसके बाद ज्ञात नहीं हो पाती है।



त्रिस्कन्धज्योतिषम् प्रकाशनम्

ग्रन्थसूची

स्वप्नविद्या

इस ग्रन्थ में स्वप्नों से सम्बन्धित फलादेश वेद, पुराण, स्वप्नग्रन्थ, आयुर्वेद एवं आगम से चयनित कर दिये गये हैं।

मूल्य १००/-

बजरंगबाण

श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत बजरंगवाण की हस्तलिखित पाण्डुलिपि को अयोध्या से प्राप्त कर प्रकाशित किया गया है। इसमें मन्त्रों की संख्या अधिक है।

मूल्य २/-

मंगलागौरीस्तोत्रम्

कन्याओं के विवाह में मंगलग्रह के कारण उत्पन्न विघ्न को दूर कर शीघ्र विवाह सम्पन्न कराने का अभ्युपाय इसमें वर्णित है।

मूल्य १०/-

श्री महाविद्यातन्त्रम् एवं श्री विपरीतप्रत्यङ्गिरातन्त्रम्

अत्यन्त महत्वपूर्ण तान्त्रिक प्रयोग है महाविद्यातन्त्र और विपरीतप्रत्यङ्गिरातन्त्र। इनसे जीवन रक्षा होती है।

मूल्य २५/-

प्रपा

सांस्कृतिक एवं ललित निबन्धों का हृदयहारी ज्ञानवर्धक संग्रह है। इस देश की संस्कृति के अछूते एवं लुप्त होते पक्षों को उकेरा गया है।

मूल्य १००/-

शीघ्र प्रकाश्य

वंशवृद्धिकर कवच

पुत्र प्राप्ति में बाधक तत्वों को दूर कर पुत्ररत्न की प्राप्ति कराने में अत्यन्त सफल कवच है।

सूर्य-आराधना

इस ग्रन्थ में सूर्य से उत्पन्न दोष को दूर करने हेतु अनेक प्रयोग दिये गये हैं। चाक्षुषोपनिषद्, आदित्यहृदयस्तोत्रम् आदि दिव्य प्रयोग इसमें संकलित हैं।

आवरण सज्जा : ईप्सिता

हिन्दू अङ्क प्रतीक